

४



# ରିଦେହ ୪୩୨



ରିଦେହ ଯେଥିନି ସାହିତ୍ୟ ଶ୍ରାନ୍ଦୋନନ: ମାନ୍ବଶୀମିତ ସଂସ୍କ୍ରତାଢ଼



ସଢ଼ପାଦକ: ଗଜେନ୍ଦ୍ର ଠାକୁର।

[রিদেহ- প্ৰথম মৈথিলী পাম্বিক গ্ৰ-পত্ৰিকা ISSN 2229-547X Videha e-Journal (since 2000) at [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) ]

ঐ পোখীক সৰ্ৱাধিকাৰ স্বৰক্ষিত খ্ৰিষ্টি। কাৰ্পীবাগ্ৰাণ্ট (©) ধাবকক নিখিত অৱমতিক ৰিৰ্না পোখীক কোনো ঋশীক ছায়া প্ৰতি ঐৰি বিকাৰ্টিগ সহিত গনেক্ৰুটানিক অখৰা ষাঁত্ৰিক, কোনো মাধ্যমসঁ, অখৰা জ্ঞানক সঁগ্ৰহণ ৰা পুনৰ্ণয়োগক প্ৰণালী দুবা কোনো কপমে পুনৰুপোদন অখৰা সঁচাবন-প্ৰসাৰণ নে কএন জা সকেত খ্ৰিষ্টি।

(c) ২০০০- ২০২০. সৰ্ৱাধিকাৰ স্বৰক্ষিত/ ভাৰসৰিক গাছ জে সন ২০০০ সঁ য়াল্লিসিঠীজপব ভ্ৰন [http://www.geocities.com/.../bhalsarik\\_gachh.html](http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html) , <http://www.geocities.com/ggajendra> ষ্মাদি ৰিকপব ষ্মা অখৰো গ জ্ঞানগ ২০০৪ ক পোস্টি <http://ggajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> কেব কপমে গ্ৰন্থবনেঠপব মৈথিলীক প্ৰাচীনতম উপস্থিতক কপমে ৰিভমান খ্ৰিষ্টি (কিছু দিন তেহ <http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> ৰিকপব, স্ৰোত wayback machine of [https://web.archive.org/web/\\*/videha 258 capture\(s\) from 2004 to 2016-](https://web.archive.org/web/*/videha%20258%20capture(s)%20from%202004%20to%202016) <http://videha.com/> ভাৰসৰিক গাছ-প্ৰথম মৈথিলী বঁনাগ / মৈথিলী বঁনাগক এগ্ৰীশেঠব)।

গ্ৰ মৈথিলীক পলিন গ্ৰন্থবনেঠ পত্ৰিকা থিক জকব নাম ৱাদমে ১ জনৱৰী ২০০৪ সঁ 'রিদেহ' পড়লৈ। গ্ৰন্থবনেঠপব মৈথিলীক প্ৰথম উপস্থিতিক য়াত্ৰা ৰিদেহ- প্ৰথম মৈথিলী পাম্বিক গ্ৰ পত্ৰিকা ধবি পছচন খ্ৰিষ্টি, জে <http://www.videha.co.in/> পব গ্ৰ প্ৰকাশিত হোজত খ্ৰিষ্টি। ষ্মাৰ "ভাৰসৰিক গাছ" জানবৃত্ত ৰিদেহ' গ্ৰ-পত্ৰিকাক প্ৰজাক সঁগ মৈথিলী ভাষাক জানবৃত্তক এগ্ৰীশেঠবক কপমে প্ৰয়জ ভ্ৰ বহন খ্ৰিষ্টি।

(c)২০০০- ২০২০. ৰিদেহ: প্ৰথম মৈথিলী পাম্বিক গ্ৰ-পত্ৰিকা (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA. সম্পাদক: গজেন্দব ঠাৰু। Editor: Gajendra Thakur. In respect of materials e-published in Videha, the Editor, Videha holds the right to create the web archives/ theme-based web archives, right to translate/ transliterate those archives and create translated/ transliterated web-archives; and the right to e-publish/ print-publish all these archives. বচনাকাব/ সঁগ্ৰহকৰ্ত্ততা ষ্মপন মৌনিক ষ্মা ষ্মপ্ৰকাশিত বচনা/ সঁগ্ৰহ (সঁপূৰ্ণ উত্তবদাযিৰ বচনাকাব/ সঁগ্ৰহকৰ্ত্ততা মধ্য) [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) কেঁ মেন ষ্মেটচমেটক কপমে পঠা সকেত ছথি, সঁগমে ও ষ্মপন সঁক্ষিপ্ত পবিচয় ষ্মা ষ্মপন স্কেঁন কএন গেন ফোঠো সেহো পঠাৰিথি। এতত প্ৰকাশিত বচনা/ সঁগ্ৰহ সভক কাৰ্পীবাগ্ৰাণ্ট বচনাকাব/ সঁগ্ৰহকৰ্ত্ততাক

नगमे छुहि आ जत॒ बचनाकाब/ संप्रवेकर्त्ताक नाम ने खड्डि तत॒ ङ्र संपादकाधीन खड्डि/ सम्पादक: रिदेह ङ्र-प्रकाशित बचनाक रेख-आर्काङ्गर/ धीम-आधावित रेख-आर्काङ्गरक निर्माणक अधिकाव, ए सत आर्काङ्गरक खबराद आ निर्पातबण आ तकवो रेख-आर्काङ्गरक निर्माणक अधिकाव; आ ए सत आर्काङ्गरक ङ्र-प्रकाशन/ प्रिण्ट-प्रकाशनक अधिकाव बथेत छुथि/ ए सत नेन कोनो बायन्टी/ पाविश्रमिकक प्रारधान ने छे, से बायन्टी/ पाविश्रमिकक ङ्रक बचनाकाब/ संप्रवेकर्त्ता रिदेहसँ ने ङ्रडुथु/ रिदेह ङ्र पत्रिकाक मासमे दू ठा खँक निकलेत खड्डि जे मासक ०९ आ १७ तिथिके [www.vidaha.co.in](http://www.vidaha.co.in) पब ङ्र प्रकाशित कएन जागत खड्डि।

Font/ Keyboard Source: <https://fonts.google.com/> , <https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts> , <https://keyman.com/>

*These are print-on-demand books, send your queries to [editorial.staff.vidaha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.vidaha@zohomail.in). The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, [sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com)], send your queries to [sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com). The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2224-547X VIDEHA are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.*

© Preeti Thakur ([sales.vidaha@gmail.com](mailto:sales.vidaha@gmail.com)) Cover design: AUM GAJENDRA THAKUR

VIDEHA:432



समानात्रब पबम्पबाक रिष्ठापति- चिब्र रिदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलान मठन द्वाबा।

*मेथिनी भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् / हनमन्तः उङ्गरान- मारुथामिह सँस्रताम्।*

**खनफम**

রিদেহ ৪৩২ ম ঞ্ক ১৭ দিসম্ব ২০২৩ (রর্ষ ১৮ মাস ২১৬ ঞ্ক

৪৩২)ঐ ঞ্কমে ঞ্চি:-

গত্ৰ

২.১.কনুপনা মা-মেথিনী সাহিহমে ঔপেন্দব নাথ মা 'রাস' ঐর

স্নানক পবিরাবক যোগদান -19

২.২.হিতনাথ মা-মেথিনী সাহিহমে তাবানাথ মা ঐর স্নানক

পবিরাবক যোগদান-11

২.৩.স্বভাষ কুমাৰ কামত- চর্চিত গাম নৌস্বারাখব

২.৪.নানদের কামত-২ ঠা নঘুকথা- ঞ্গৌ ঞ্গা রন্দেমাতবম

২.৩. পবমানন্দ নান কর্ণ-মাযক নান

পত্র

৩.১. স্বাশীষ খনচিহাব- ২ ঠা গজন

## *Maithili Literature in English Translation*

*4.1. The moon's Journey- Jagdish Prasad Mandal  
(Original Maithili Short Story) Rameshwar Prasad  
Mandal (English Translation)*



ଗଦ୍ୟ

୨.୧.କନ୍ଧନା ଯା-ଯୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏହି  
କ୍ଳାନ୍ଧକ ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ -19

୨.୨.ହିତନାଥ ଯା-ଯୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ଯା ଏହି କ୍ଳାନ୍ଧକ  
ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-11

୨.୩.ସ୍ଵଭାଷ ହୁମାବ କାମତ- ଚର୍ଚ୍ଚିତ ଗାମ ନୌଆରାଧା

୨.୪.ନାନଦେର କାମତ-୨ ଓ ନଘୁକଥା- ଅଗ୍ନି ଓ ରନ୍ଦେମାତବମ

୨.୭.ପବମାନନ୍ଦ ନାନ କର୍ଣ୍ଣ-ଯାଧକ ନାନ

२.१.कन्पना मा-मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं  
म्लानक पबिरावक योगदान -19



कन्पना मा

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्यास' एरुं म्लानक पबिरावक  
योगदान -19

नेना-भुठका नेन अन्नमोन उपहावः अरुव पबिचय

"अरुव पबिचय" पोथी जखन-जखन हाथ मे नेत छी, रूमत किछु

चनए नागेत अरु छि दिमाग मे। "सन्नासी, "श्रीमद्भगवद्गीता,

"ମୈଥିନୀ ମହାଭାବତ" ସନ ପୋଥୀକ ବଚସିତା "ଅଧିକାର ପବିଚୟ"  
 ପୋଥୀ ମେ କକହାବା ନିଧନି ଅଧିକାର/ ଓହିନା ନହି ଅଧିକାର ରାଜିର  
 କହୈତ ଅଧିକାର ହିମ, କି ସମାଜ/ ଏହନ ସର୍ବତୋମୁଖୀ ଯୋଗାତା ସଭକ  
 ଭୀତବ ଥୋଡ଼ରେ ନେ ଭ' ସକୈତ ଅଧିକାର/

"ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରି ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ  
 ଯୋଗଦାନ" ପବ ନେଧ ସଭ ନିଧରାକ ଏମ ମେ ଏଧନହି ହିମବା ପତା  
 ନାଗନ ଜେ "ଅଧିକାର ପବିଚୟ" ପୋଥୀ ମେ ସିନଗ୍ର କରିତା 'ଅଧିକାର  
 ମଧିକାର ଧେନ ଧେନାଓ, ଅଧିକାର ରୀତି ଗାଧିରା ନାଓ" ରଜ୍ଞତ ଦିନ ପହିନହି  
 ନିଧନ ଅଧିକାର/ ପ୍ରାୟ: ରିରାହ-ପୂର୍ବହି/ ଏକଦମ ଠୀକ-ଠୀକ ତଁ କହୈ  
 କଠିନ ଅଧିକାର ଘବକ ସଦସ୍ୟୋ ସଭ ନେନ/ ଯୁଦା ଏତରା ପତା ନାଗନ  
 ଗପ୍ପକ ଏମ ମେ ଜେ 'ରାସ' ଜୀକ ରାନକ ଶ୍ରୀ ସହେନ୍ଦ୍ର ହିମାବ  
 ଯା, ଜନିକ ଜନ୍ମ ସନ୍ 1958କ ଅଧିକାର, ସେ ଜଧନ ଚାବି-ପାଓ ରବଧକ  
 ଭେନାହ, ତଧନହି ସଁ ଜ୍ଞାନକା କିଠାଗ୍ର ଅଧିକାର "ଅଧିକାର ମଧିକାର ଧେନ  
 ଧେନାଓ, ଅଧିକାର ରୀତି ଗାଧିରା ନାଓ/" ଜେନା ମିଧିନାକ ଧିଧା-ପୂତା କେ  
 ରାନାକାନହି ସଁ କିଠାଗ୍ର କବାଓନ ଜାଓତ ବହନ ଅଧିକାର, "ସା ତେ ଭରତ

স্বপ্নিতা দেৱী শিখবৱাসিনী ঔগ্ৰেণ তপসা নষ্টো যযা পশ্বপতিঃ  
পতিঃ।" তহিনা 'ৱাস' জী শ্ৰুত্যা শৌক সভক সঁগ "শ্ৰুতকন  
মঠকন খেন খেনাউ, শ্ৰাম ৱীষ্টি গাষ্টিসঁ নাউ" কঁঠাগ্ৰ কবৱা দেনে  
ছনথিন। এহি প্ৰসঁগ সঁ সিঙ্হ হোঙত শ্ৰুষ্টি জে ঙ্ৰ বচনা  
সন্ 1962-63 সঁ পহিনে তঁ নিশ্চিত নিখন জা চুকন ছননি। ম্বদা  
প্ৰকাশিত ৱঁদাত ৱঁদ মে কবৱাওন গেন। এহি পোথীক জে প্ৰতি  
হমবা নগ শ্ৰুষ্টি, তকব প্ৰকাশন ৱৰ্ষ 1988 নিখন শ্ৰুষ্টি। ঙ্ৰ দোসব  
সঁস্কবণ শ্ৰুষ্টি। প্ৰথম সঁস্কবণ 1984 মে প্ৰকাশিত ভেন  
ছননি, এহন স্বনন শ্ৰুষ্টি। প্ৰথম সঁস্কবণক সান এহি পোথী মে  
নিখন নহি শ্ৰুষ্টি কত্‌তন্ম।

"শ্ৰুষ্টিব পবিচয়" মেথিনী সাহিত্ মে 'ৱাস' জীক একঠা এহন  
যোগদান ছনি জে দেখৱা মে ছোঠ-ছিন ছনি ম্বদা ওকব প্ৰভাৱ  
শ্ৰা চৰ্চা, ৱঁড়কা-ৱঁড়কা কাজ সঁ ৱেঁসী বহননি, সে কহন জা  
সকেঁছ। কতেক নোক কবেঁ তঁ কঁঠস্থ হেতনি 'ৱাস' জীক ঙ্ৰ

ସ୍ୱପ୍ରସିଦ୍ଧ କରିତା/ କାବଳ, ଗେ଼ ବହନେ କିଠସ୍ଥ କବରୁଁ ରି଼ମ୍ମତେ ସହଜ  
 ଢ୍ଢେ/ ମାତ୍ର ଚୌରୀସ ପଲ୍ଲକ ରାନ-ପୋଥୀ 'ଅଞ୍ଜବ-ପବିଚୟ' ଭନେ  
 ହି 'ରାସ' ଜୀ ବଚିତ ସଭ ସୁଁ ପାତବ, ସଭ ସୁଁ କମ ପଲ୍ଲକ ପୋଥୀ  
 ଢ୍ଢନି ସ୍ୱଦା ଢ୍ଢନି ରୈସ ମହରୁପୂର୍ଣ୍ଣ/ ନେନା-ଭୁଠକା ନେନ ଗ୍ରା ପୋଥୀ  
 ଅନମୋନ ଓପହାବେ ରୁଁମୁ/ ଆ ସଭ ସୁଁ ମହରୁପୂର୍ଣ୍ଣ ରାତ ଜେ ଏହି ତବହକ  
 ପୋଥୀ (ନେନା ସଭ କେଁ ଅଞ୍ଜବ ସୁଁ ପବିଚୟ କବାରୈତ) ଏହି ସୁଁ  
 ପହିନେ ତୁଁ ନହିଏ ଢ୍ଢନଏ, ମୈଥିନୀ ମେ/ ଆ ଏକବ ରାଦୋ ପ୍ରା଼ଃ ଏହି  
 ତବହକ କିଢ୍ଢୁ ନିଖନ ନହି ଗେନ ଅଞ୍ଜି/ ଓନା ଭ' ସକୈଏ ପ୍ରକାଶିତ  
 ଭେନ ଲାଅଏ ଆ ହମବା ଜନତରୁଁ ମେ ନହି ଆଏନ ଲାଅଏ/ "ଅଞ୍ଜବ  
 ପବିଚୟ" ପୋଥୀ ମେ ନେନା ସଭ ନେନ ସଭ କିଢ୍ଢୁ ଅଞ୍ଜି/ ଅଞ୍ଜବ ସୁଁ  
 ପବିଚିତ କବରୈତ, ଶିଢ୍ଢୁ ଆ ଢ୍ଢୋଠ-ଢ୍ଢୋଠ ରାକା ଧବି ପଢ଼ରୁଁ-ନିଖରୁଁ  
 ସିଖରୈତ ସନ/ ଙୁଁ ଏହି ପୋଥୀ କେଁ ନିକ, ଚିକ୍କନ କାଗଜ  
 ପବ, ଅନ୍ଦବ-ଅନ୍ଦବ ଚିତ୍ରକ ସି଼ଗ ପ୍ଵନଃ ପ୍ରକାଶିତ କବରା଼ନ ଜାଏ ତୁଁ  
 ଗ୍ରା ପୋଥୀ ନେନା ସଭ କେଁ ରି଼ମ୍ମତ ଆକର୍ଷିତ କବତନି/ ଆ ଘବ-ଘବ  
 ବାଖନ ଜାଏତ, ସେ ରିଶ୍ଵାସ ଅଞ୍ଜି/ ଏହି ଦିସ ଧ୍ୟାନ

देथि 'र्यास' जीक संतति आ प्रकाशक नोकनि तँ माँ मेथिनीक  
प्रति रँड़का उपकार होअतनि।

आरँ कने गप्प क' नेत छी "अखर पविचय" पोथीक भीतबक  
कँछेँछे केव। नेना सभ नेन पोथीक सृजन कबैत रँम्मत रँतक  
ध्यान बाखरँ आरथक बहैत छै। रँन-करिता, रँन-कथा, किँरा  
कोनो रिधाक रँन-साहित्यक बचना कबैत बचनाकार केँ ध्यान  
बाखरँक चाही जे ओ रँन-साहित्यक पोथी एहन अखरए जे  
एकठा नेनाक शारीरिक, मानसिक, रौद्रिक रिकसक  
नेन 'ठानिक'क काज कबए। एकठा नेनाक मोन मे शिखरक  
प्रति कचि रँड़एरँक काज कबए ओ पोथी। संगहि नेनाक मोन  
मे जिह्सा जगएरँक काज सेहो कबए। आ मनोवँजक तँ  
सहजहि हेरँके चाही। मनोवँजक बहैक तखनि ने कचि सँ  
पठत नेना सभ आ कचि सँ पठत तँ सूतः रँव-रँव पठए  
चाहत। अपन संगी-साथी के सेहो पठि क' अनाओत, पोथी

ଦେଖାଓତ ସଭ କୈ/ ମାନେ ଥପନା କଚିଗବ ନଗତନି ତଁ सहजहि ଓ  
 ଦୋସବୋ ନେନ କଚି ଜଗଏରାକ ଆଗ୍ରହୀ ରନତ/ ସେ ସଭଠୀ ରାତକ  
 ଧ୍ୟାନ ବାଧନ ଗେନ ଶ୍ଚିତ୍ତି ଏହି ପାତବ-ଚ୍ଚିତବ ପୋଥୀକ ସୃଜନ କବୈତ/  
 ରାନ-ପୋଥୀ ସଭ ମେ ଭାଷାକ सहजता ପବ ରିଶୈଷ ଧ୍ୟାନ ଦେରୁ  
 ସେହୋ ଆରଥକ ବହୈତ ଛୈ/ ଶ୍ଚା ସେ 'ରାସ' ଜୀ ତତେକ ଧ୍ୟାନ ବଧନି  
 ଶ୍ଚିତ୍ତି ଜେ ନେନା ସଭକ ନେନ ନିଧନ ଗେନ ଏହି ପୋଥୀ ମୈ କତଲ୍ଲ  
 ସଂଯଜାଃବ ନହି ଭେଠତ/ "ଶ୍ଚଠକନ ମଠକନ ଧେନ ଧେନାଠ" ନେନା ସଭ  
 ନେନ ନିଧନ ଗେନ ଏକଠୀ ଏହନ କରିତା ଶ୍ଚିତ୍ତି, ଜକବା ପଠୈତ ନେନା  
 ତଁ ନେନା, ନେନାକ ମାଏଓ-ରାପ ପ୍ରଫୁନ୍ନିତ ଭ' ଜାଠଥ/ ତେହନ ପ୍ରରାହ  
 ଛୁନି 'ରାସ' ଜୀକ ନିଧନ ଏହି ରାନ-କରିତା ମେ/ ଗ୍ରା ପ୍ରରାହ ରାନ-  
 କରିତାକ ନେନ ସଭ ସଁ ଆରଥକ ତର ଶ୍ଚିତ୍ତି/ କରିତା ଛୁନ୍ଦୟଜ ଲ୍ଲଶ୍ଚଏ  
 କିରା ଛୁନ୍ଦୟଜ, ପ୍ରରାହୟଜ ତଁ ହେରାକେ ଚାହି ନେ ! ଶ୍ଚା ପ୍ରରହମାନ  
 ବହନେ ନେନା-ଭଠକାକ ଠୋବ ପବ सहजता ସଁ ଚଢ଼ି ଜାଠତ ଛୈ  
 କରିତା/ ଦୀର୍ଘାରଧି ଧବି କିଠସ୍ଥ ସେହୋ ବହୈତ ଛୈ ପଠନ ଗେନ  
 କରିତା/ ସେ ନେନାକ ନେନ ନିଧନ ଜାଏ କି ଚେତନ ନେନ/ ଏମ୍‌ହବେ

ଏକଥା ରାନ-କରିତା-ସଂଗ୍ରହକ ହମିକା ମେ କେଦାବ କାନନ ଜୀକ  
ନିଧନ ହମିକା ପଢ଼ନାଁ/ ସେ ଜ୍ଞାନକବ କହନ ରାତ ହମବା ରୈସୀ କାନ  
ମୋନ ପଢ଼େତ ବଢ଼େଏ/ ଓ କହନି ଶ୍ଵଞ୍ଚି, "ପାଁତୀ କେ ତୋଡ଼ି ତୋଡ଼ି  
ନିଧି ଦେରଁ କରିତା ନହି ଭ' ସକୈତ ଶ୍ଵଞ୍ଚି, ସେ ଶ୍ଵଞ୍ଚିଜନ ନୋକନି  
ଜନୈତ ଛୁଧି/ କରିତା କଠିନ ସାଧନା ଥିକ/" ଶ୍ଵା ସେ ସାଧକ  
ଛୁନାହ 'ରାସ' ଜୀ/ ଛୁନ୍ଦ ପବ ନୀକ ପକଡ଼ ଛୁନି 'ରାସ' ଜୀକ/ ହମବା  
ହିସାରଁ ସଁ 'ରାସ' ଜୀକ ରାନ-କରିତା 'ଶ୍ଵଞ୍ଚକନ-ମଞ୍ଚକନ ଧେନ  
ଧେନାଠ' କେ କାନଜୟୀ ବଚନା କହନ ଜା ସକୈଛୁ/ ଶ୍ଵା ତେଁ ଓହି  
କରିତା କେ ହମ ଛୁ-ରଁ-ଛୁ ଏହି ଠାମ ସନଗ୍ର କବଏ ଚାହଁ/

ଶ୍ଵ--ଶ୍ଵଞ୍ଚକନ-ମଞ୍ଚକନ ଧେନ ଧେନାଠ

ଶ୍ଵା--ଶ୍ଵାମ ରୀଞ୍ଚି ଗାଞ୍ଚିସଁ ନାଠ

ଞ--ଞଚନା ମାଁଛୁକ ସାନା ହୋଞଛୁ

ଞ--ଞଠାସଁ ଘବ ମହନ ରଁନେଛୁ

ଠ--ଠଚଞନକେଁ ଚୁନ୍ତା ପବ ଦେଖୁ

ଓଁ--ଓଁସବ ଧେତମେ ଗୋରବ ଫେହ  
ଋ--ଋଷିମ୍ବନି ସରଠିକ ହୁଠି ସମାଜ  
ନୃ--ନୃ-ନୃ ସଁ କୋନୋ ନେ କାଜ  
ଏ--ଏକ ପହିନ ଗିନତୀକେଁ ମାନୁ  
ଐ--ଐନା ଏକ କତମ୍ମାସଁ ଥାନୁ  
ଓ-ଓନ ରଠ୍ମାତ କରଠକରଠ ଥଠ୍ତି ଭାଠ  
ଔ--ଔଠନ ପାନି ରଠ୍ମାତ ସ୍ଵଧଦାଠ  
ଐ--ଐଗା ହମବ ଛୋଠ ଭୟ ଗେନ  
ଐଃ--ଐଃ ଧନ ହମବ ଚୋବ ନୟ ଗେନ  
କ--କକରାସଁ ଥୁଁ ସିଠି କେସ  
ଖ--ଖଠବନାନକେଁ ନଗନନି ଠେସ  
ଗ--ଗଦହା ହୋଠଘେ ପଶ୍ଵମେ ରୁଁଠି  
ଘ--ଘଠି ଥାଧିକ ଛୁନହିସଁ ଦୃବି  
ଠ

চ--চনু সভহি মিনি দেখু নাচ

ছ--ছও পেসামে কিননন্স সাঁচ

জ--জনমে রঁস্নতো জীর বহেঁছ

ঝ--ঝঠ দ' কবরঁ নীক নহিঁ হোঙছ

ঞ

ট--টঠকা জনসঁ খুরঁ নহাউ

ঠ--ঠকক সঁগমে পড়ী নে রাঁউ

ড--ডমক ডিমডিম রঁজরী শ্বানি

ঢ --ঢকব--ঢকব নহি পীরী পানি

ণ

ত--তবরঁামে নহি হোঙএ কেশ

থ--থবথব কাঁপথি ডবেঁ ধনেশ

দ--দহী-চুড়ামে গাক শ্বাম

ধ--ধনধন ছনা ভবত ও বাম

ନ--ନବକ ଜାଏଁ ଜି କବରୈ ପାପ

ପ --ପଢ଼ା--ପଢ଼ା କଠତୌ ଓ ସାପ

ଫ--ଫଠକ ନଗା କ' ରାହେ ଭେନ

ର--ରଢ଼ଦ କୈ ଚବର' ନଏ ଗେନ

ଭ--ଭବତ ନାମ ପବ ଶ୍ଚି ଗ୍ର ଦେଶ

ମ--ମହାବାଜ କହରୁଥି ମିଥିନେଶ

ସ--ସଶି ଭଗରାନକ ଶ୍ଚପର୍ବିପାବ

ବ--ବମା ସିଂଗମେ କବଥି ରିହାବ

ନ--ନନକା ଧୋତି ପହିକ ରାଠ

ର--ରନମେ ଏସଗବ ଶ୍ଚାଁ ନେ ଜାଠ

ଶ--ଶୈଠ ବାରଣକୈ ମାବନ ବାମ

ଷ--ଷଢ଼ମୁଖ ସ୍ତବ-ସେନାପତି ନାମ

ସ--ସଭସି ପୈଘ ଥିକା ଭଗରାନ

ह--हम सभ कवी ज्ञानक शृणगान

३४--३४त्रिय उँपव ब३क भाव

त्र-छ --त्र-छ पठि रँस श्र३व पाव

एहि गेय करिताक श्रतिविज एहि पोथी मे श्रद्धि नेना सभ  
नेन देन गेन श्र३व चिहँरँक ठाँस्क, दू पन्ना मे/ तकव रँदक  
छउ पन्ना मे श्रद्धि पढ़रँक श्रत्तास नेन छोट-छोट शँङ्ग  
सभ/ 'श्र' स सँ न' क' 'श्रः' धविक मात्रा सँ यज शँङ्ग सभ/ तकव  
रँद ककहावा श्रा तकव रँद पाठ एक सँ न' क' एगावह धवि  
छोट-छोट राका रँना, छोट-छोट श्रधाय सभ/ श्रा सभ सँ श्रन्त  
मे भगरानक रिनती/ एहि पोथीक रिषय मे एतेक रिस्ताव  
सँ चर्चा कवरँक पाछाँ कावण ग्रा श्रद्धि जे रँसी-सँ-रँसी नोक  
केँ एहि पोथीक रिस्तृत जनतरँ होजन/ श्रा एकव उपयोगिता  
रँमथि सभ/ घव-घव बाखन जाए ग्रा महत्पूर्ण पोथी/ श्रन्त मे  
एहि पोथी "श्र३व पविचय" मे सँनग्र श्राठ पाँतिक रिनती सेहो

ঠিপিএ দৈত ছী/ রঁমত নীক রিনতী খ্ৰুছি/ দেখন জাএ নেনা সভ

নেন সবন ভাষা মে নিখন গেন 'রিনতী' --

জয ভগরান জয ভগরান /

হেম সভ কবী খ্ৰুঁক গুণগান //

খ্ৰুঁক বচন খ্ৰুছি গ্ৰা সঁসাব /

জন খন নভক খ্ৰুঁকী খ্ৰাধাব //

মাতা পিতা মিত্র খ্ৰুঁক ভাএ /

সতত বহু খ্ৰুঁকী হেমব সহায় //

গ্ৰাশ হেমব খ্ৰুঁক গুণ হবি নের /

রিনতী কবী, নীক মতি দেৰ //

কতেক নীক রিনতী ছে নে ! এহন রিনতী পঠেত জে রঁচা

নমহেব হোএত, ভগরান রাস্তর মে স্নানকা নীক মতি দেৰে

কবখিন!

সঁপাদকীয় সূচনা- এহি সিবিজক প্ববান ক্রম এহি নীকপব জা

কহ পঠি সকেত ছী-

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-1

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-2

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-3

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-4

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-5

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-6

मैथिनी साहित्यमे उपेन्द्र नाथ मा 'र्रास' एरुं न्नक पबिरावक

योगदान-7

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-୪

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-୫

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-10

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-11

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-12

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-13

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

ଯୋଗଦାନ-14

ମୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟରେ ଓପେନ୍ଦ୍ର ନାଥ ଯା 'ରାସ' ଏରଂ ଜ୍ଞାନକ ପବିରାବକ

योगदान-15

मेथिनी साहित्ये उणेन्दुर नथ म्म 'रस' ऐरुं म्मनक पविरावक

योगदान-16

मेथिनी साहित्ये उणेन्दुर नथ म्म 'रस' ऐरुं म्मनक पविरावक

योगदान-17

मेथिनी साहित्ये उणेन्दुर नथ म्म 'रस' ऐरुं म्मनक पविरावक

योगदान-18

**अपन मंतरा [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पव पठाड।**

୨.୨.ହିତନାଥ ଯା-ଯୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ଯା ଏଠି କ୍ଳନକ  
ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-//

ହିତନାଥ ଯା- ଯୈଥିନୀ ସାହିତ୍ୟେ ତାବାନାଥ ଯା ଏଠି କ୍ଳନକ  
ପବିରାବକ ଯୋଗଦାନ-//



ହିତନାଥ ଯା

ଯୈଥିନୀଯେ ଗ୍ରାମଗାଥା ରିଧାକେଁ ନର ଜୀରନ ଦେନିହାବ, ପାଠକୀୟ

रिधक श्रुश्रु/ संपर्क-११३०७१३०७०)

मेथिनी सलहमे तलवलथ लल ऐरुं लनक पविरलवक  
योगदलन //

### वलनी चनुवलरतीक कीरुतलगलथल

रलगत श्रुंकमे वलनी चनुवलरतीक जीरन-चवले 'पुलत क  
उपनष्टु श्रुंकसुं रलडलन करल ऐरुं नेखकक वचना पुसुत कयने  
वली/ कलशीकलनु मलशु 'मधुप' जीक सेहो वलनी चनुवलरती-चवले  
धलवलरलहक कपमे पुकलशलत दुननल/ सत श्रुंक मलनल क' हन पद  
सुंखल ५/ वहनल, सुदल / सुं ११ धवल श्रुंक उपनष्टु नहल वहनलक  
कलवणसुं २० सुं ५/ धवल पुसुत क' वहन दुतल/ मधुप जीक ङ  
पुलवमुडलक वचना थलकनल/ मधुपजी श्रुपन सुंसुवणलमेक  
पुलथी 'पुलवणलपुंड' मे सुंलकलव कयने दुथल जे ङ वचना  
समुपुतल लनकल नग उपनष्टु नहल दुनल/ )सनुदुडु : पुलवणल-  
पुंड, पुशु सुंखल -५०/ मधुपजीक ऐहल श्रुलवमुडलक वचनाक

ঐতিহাসিক মহত্বকে দেখেত, কতক্ষ ঋত্বত্র উপনষ্ট নহি বহনাক  
কাবণসঁ একব মহন্ন ঋব রঁড়ি জাওছ/ এহি ঋশঁকেঁ  
প্রো.ভীমনাথ ঝাক পোখী 'করিচূড়ামণিক কারাসাধনা' মে  
সেহো প্রস্তুত কখন গেন ঋছি/ )সন্দর্ভ :করিচূড়ামণিক  
কারাসাধনা, পৃষ্ঠা~ 259~260)

এরঁ ঞমে দশঁ রঁষ মে ভেনীহ কন্না দান কাঁ/

যোগ্যা প্রস্তুত ঋণ ঝজা রিহঁষিত রঁনিকা//

হিনকব সকন ঋণ কেব চর্চা চনন পৃথ্বী রঁচমে/

ঞ রঁাত পদ্মানন্দ সিঁহ নবেন্দ্র স্বনেননি রঁচমে//20//

ঋতি স্বন্দবী ঋণ শানিনী ছুথি তেঁ ঋহা হো র্যাহ জেঁ/

ঋজ রঁনিকা কাঁ সঁগ চন্দ্রবানন্দ সিঁহক ঠীক তেঁ //

কাবণ নিখিন ঋণ ঝজ হমবো পুত্র চন্দ্রবানন্দ ছুথি/

ঞ রঁাত বানী সোঁ রঁনৈনী হুপ রঁজনা পূজা মতি//21//

ॐ रात समक मधा प्वनि रँजनाह हपति मोद मन।

श्वन्मोदनो कय देन सभ जे छन सभा काँ सञ्जन॥

रँशै केँनथो ॐ रात पण्ठित उँग्रनाथ\*क कानमे।

नृप केव चव पठरौन जे की ष्टेठ जातिक शानमे॥22॥

नहि छोठ मे हम देरँ कथा ॐ यदपि रँजनाह ओ।

सभ रँहू गण काँ प्रार्थना सोँ कथा मे पड़नाह ओ॥

ओ घठक केँ पठरौन देखे नै रवक ग्वण कप केँ।

पहिने यदपि श्वनने छना सभ लानक भरा सुकप केँ॥23॥

नठ पाग नठ पठ माथ धोती फाँने सन हाथ मे।

फाँन फवाठी काँथ मोबी भस्म नेपन गत मे ॥

चूडन श्वपाड़ी मूँह रँठुआ डार चून तमाकनो।

चूनरैत गप्प गठैत सरँ ष्ठा दाँत मूँहक ठुँठनो॥24॥

मधरँक श्वाँथिक तना हव रिशिष्ट छता तानने।

गेना रँनेनी घण्टक कपया नोभसँ हर्षित मने॥

रब देखि केँ चुप्पे भेना ग्ण केव चर्चा मात्र की ।

ग्ण कप रर्णन शेष शीवद केँ सकेँ छुथि ठीक की॥25॥

रँस देखि रब अघनाह केँनख घण्टक ग्णतहि कप सौँ।

कन्या गतक आगू कहन सरँ रात रिस्तब कप सौँ ॥

सौँदर्य लानिकब की कहूँ ओ रिङ्ग का अरताव छुथि।

ओ कपमे कन्दर्प दर्प रिनाश काँ हित एँन छुथि॥26॥

आजानि लानिकब राम लोचन कर्ण तक रिस्ताव छुनि।

जन्य पाकने तिनकोव काँ हन ठौव दनू नान छुनि॥

मूख केव सुषमा चन्द्रमा सौँ देत नज्जा रूहेत अछि।

सकनक दिस मनीन रिष काँ रँहुँ जेँ रिङ्ग दीन अछि॥27॥

एहनो द्विजेशक जोति सौँ अवरिन्द पनि हम्तनाज अछि।

उपमा लानिक की देरू लानि मूख अन्नपमेय यथार्थ अछि॥

बरि उना तेज तथापि मृद्वता चन्द्रवमा काँ धाम सन/

बिष्व कप कानन केव पंचानन थिका प्वन शान्त मन॥28॥

श्वक उना रिछा केव प्रेमी रित्रतमे हरेव सन/

उ दानमे छुथि कर्ण सन वण ऋत्रमे छुथि पार्थ सन॥

उ गानमे र्वक्का तनय सन ऋोधमे यमबाज सन/

श्वहन्र चित्त उदाव पूजा पाठमे वत वाति दिन॥29॥

\* बानी चन्द्रवारतीक पिता उग्रनाथ मा

(रर्ष-2, श्वंक -4, श्वप्रिन-1934 ञ।

हानि कप श्वण रर्णन श्वशेष न शेष के सकञ्छ सथे/

प्वन की कहु हम तदपि किञ्छुओ कहि श्वनारन निज मते!?

ञ कार्य श्वपने श्वश्व पञ्जित जी प्वछे छी राँत जौँ/

श्वानन्द पूर्रक केन जाय रिचाव दे छी सान्त सौँ॥30॥

श्वनि जा र्वनेनी सँग पजियावक नबेशक सामने/

ସିଂହାନ୍ତ କବରାରନ ଧନୋ ଶୁଠରୌନ ହପତି କଂଚନେ॥

ଜା ରିହ୍ମ୍ୟପର୍ବତ ଭେନ ରାହ ପବୀଛ ଐନୀ କାମିନୀ।

ସ୍ଵଭେ ସ୍ଵହାଗିନି ଗୀତ ଗାର୍ଠି ମତ୍ତ ଗଜ ସନ ଗାମିନୀ॥31॥

ଆହା ର୍ଵନେନୀ କେବ ଶୌଭା ତାହି କାଞ୍ଚକ କୀ କହ୍ନ।

ହେବସ୍ତ ଶାବଦ ଶେଷ କାହି ନ ସକେଛ ପ୍ଵନ ହମ କୀ କହ୍ନ॥

ସଦ୍ଘାପି ସ୍ଵଧୀଂସ୍ଵକ କୌମଦୀ ଛିଠକୈତ ଛନ ଆକାଶମେ।

ପାରସ ଶ୍ଵତକ ବ୍ରମ ଛନ ସକନ ଜନ କୈଁ ଆହା !ତେ ଠାମମେ॥32॥

କୋଠାକ ଓପବ କାମିନୀ ଚମକୈତ ଛନ ଜନ୍ମ ଦାମିନୀ।

ଘନ ତନା କେଶକ ରେଶ ହୋମକ ଧମ ମାନୁ ଯାମିନୀ॥

ଠନକା ଜକାଁ ଆତୀସ ରାଜିକ ଶିଞ୍ଜ ଦିରା ଘନାର୍ଠ ଜନ।

ଛିବକୈତ ଛନ ର୍ଵବଧା ଜକାଁ ରୁମାଞ୍ଜ ଛନ ଜନ ରା କି ଧନ॥33॥

ଗହନାକ ଋମଂକାବ ଋଂଗ୍ଵବ ଶିଞ୍ଜ ରୁମି ପଢ଼େତ ଛନ।

ନଠୁଆକ ଚିତ୍ର ରିଚିତ୍ର ରସ୍ତ୍ର ମଧୁବ ତନା ରୁମାଞ୍ଜ ଛନ॥

ও কেশ কাৰী তাহি ঔপব মানতী মানা কোনা।

ৰক পঁজি নীনাকাশমে रिचबैत थुछि मानू जेना॥34॥

ग्रा देधि सरँ मुखे भेना स्वत ओ रँध केँ मोद सौँ ।

पद्मारती बानी चूमारन दे निद्धारब प्रेम सौँ ॥

रीतेत देवी छेछु की स्वथ केब रासब यामिनी।

जहिना चमकि घन मधा शीघ्रहि नोप होजछु दामिनी॥35॥

आनन्द पुर्रक रीति गेन कतेक दिन उँसेर जकाँ।

रँगातोक बँक धनीक भेन रूँमेत स्वथ जन्वे जकाँ ॥

हा !हा ! आचानक कान तारत हप चन्दवानन्द। केँ।

ने गेन सरँ दिन हेत प्बुपक पब चठा रैँफुठ केँ॥36॥

(रँर्ष~2, थँक~5, मग-1934 ग्रा.)

हा !शौक मेघक घन घष्ठा आयन रँनेनी बाजमे।

सरँ केब आँथिक नोब धावा रँहि चनन तग कानमे॥

হা !হুঁহু হুপতি হুঁহু বানী কেব হম কী কহু দশী।

দ্বনুক কানক শঙ্ক সৌ নগনীহ হা !উনঠে বশী//37//

দিন মধ্য জয়ুক কেব বজনী মধ্য কৌখা শঙ্ক সৌ।

দোসব জনক নহি শঙ্ক সুনন জাগ ছন ঞ্চতি জোব সৌ//

শ্বক ঞ্চাদি পঙ্কী তক্ক দানা খেঁর। দ্বখ সৌ ছোড়নক।

গজ ঞ্চশু রিন্ন মানীক রত জেঁরাক হিত বজ্ব তোড়নক//38//

রৈধরা নর দ্বখ দ্বঃখিতা চন্দ্বারতী বানীক কী ।

দ্বঃখ কেব হম নীখু দশী জে সভ ছনী মানীক কী //

পর্যক সৌ উতবেত ছনী নহি জে ঞ্চহাঁ !এক ছন।

সে ম্বর্জিতা পৃথ্বী পড়নি নহি ছেঁছ চেঞ্জা এক ছন//39//

সখি রঙ্গ শীতন রাবি চন্দন ঞ্চাদি কাঁ উপচাব সৌ।

মূর্ছা ছোড়ারন জাগনী নানা স্বতর্ক প্রচাব সৌ//

জগনীহ প্বন খসনীহ রঙ্গতো কান ও পড়নে ছনী।

तकी जनक श्वभ तर्क नार्सो जागृताऽरस्था भेनी॥५०॥

जगिठेहेँ ओ रँजनीह हम पति संग जवरें प्रेम सौँ।

श्वक रम्ह आरिँ निरावि देनहि रँम्ह प्रकावक यजि सौँ॥

कावण श्वहाँ काँ भाव मिथिना पानरा काँ श्वद्धि स्वनू।

तेँ रात मानू पत्रि केँ ग्रा धर्म काँ मावग स्वनू॥५१॥

स्वनि केँ श्वगहा मानि रँम्हतो दिन छुनी शौकाहना।

श्वद्धि भाव मिथिना केव नगनी श्वनमनामे द्वरँना॥

श्री भद्रकानी केव मठ रँनरौन केँनथ गाममे।

खूनरौन स्वनुव एक पोखवि माग सौँ तज ठाममे॥५२॥

ओ माजनव तक पाठशाना हसि रँन कय देन श्वद्धि।

मैष्टीक होएत हसि रँन ग्रा घोषणा भय गेन श्वद्धि॥

चवराह तक जनिक प्रसादेँ पास सम्प्रति माजनव।

श्वद्धि गाम केँनथ मधा ग्रा गप के कहु नहि जान नव॥५३॥

(বর্ষ-2, ঞ্ক-6, জুন-1934 গ্ৰা.)

ও ঞস্পতান রঁনায় বোগী হেত বাখন ডাকঠব।

তজি দেন বোগো রাঁঠ ক়ৈনখ কেব জনিকব মানি ডব॥

নিজ ভাণ নোকনি হেত রঁন্নতো কীনি পৃথুী ছুথি দেনে।

ঞ্বারাস হেতক উঁচ উঁচ প্রসাদ ছুথি রঁনরাঁ দেনে॥44॥

রঁহিনৌত রাঁরুঁ মোদ এফে পাস গঁজিনিযব রিষয।

ন্ননকে প্রসাদে গেন ছুথি জে রিচ্ছ পঠনামে পড়য॥

ভতিজীক কন্ডাদনমে জে খর্চ নাখৌঁ ক়ৈন ঞ্ছিত্তি।

পবিরাব রন্নক রাঁত কী খা। খা কতেক ঞ্ছেঁন ঞ্ছিত্তি॥45॥

দিন বাতি দীনক হেত তানা কী নগে ঞ্ছিত্তি কোষমে।

কী দান ভাগক কর্মচারী বহি সকেঁ ছুথি বোষমে॥

দ্বিজ কেব ম্বখ সঁ শেঁল্ল হোণত কিছু দেবী হোণচ্ছ কী।

নভ খন বসাতন কেব রন্সক হেত নহি গ্ৰা ছেঁছ কী ॥46॥

श्वरु सौँ कमी की द्वाव पीडित न्न न श्वन्पो मात्र छथि।

निज योग्याता श्वन्साव के सक्वोव के पारैत छथि॥

ननि माम काघिषणकनेको श्वेन सौँ छनि की कमी।

जे अमृतिजाम कबैछ रँनतो कानमे श्वन्दव दमी॥५७॥

ननि यश पताका देश मिथिना मात्र मे फहवाअछ की।

देखू श्वेन रावाणसी चनि योत सम्प्रति छैछ की ॥

श्वामा तथा शिर केव मन्दिर श्रीमती रनरौनश्वि।

पवकाश हेतक दिरा रिज्जनी जोतिके जवरौन श्वि॥५४॥

रिग्या भरन रनरौन पढ़रँा हेत मैथिन छत्र के।

भोजन श्वनेक प्रकाव काँ ओ दैत छथि निज छत्र के॥

यदि श्रीमती सौँ होअत नहि श्वेन खर्च मैथिन छत्रके।

पढ़नाअ काशीमे कठिन ठे जाअत रिदुछत्रके॥५९॥

মেনেজবো ঋতি যোগা সিঁহরাব কেঁ ছুথি রাঁরুঁ তহাঁ/  
 বহেঁক মেথিন ছাত্র কে পূণ নেশ কুশক কী তহাঁ//  
 সরঁ কেব ঋতি জড়ি ধর্ম সে রিছাক দুবা হোত ছুথি/  
 সে পঢ়থু মেথিন হেত তেঁ শ্রী শ্রীমতী তেঁযাব ছুথি//১০//

গঁগা\*ক তন্যা শ্রীমতী বানী হমব চন্দ্বারতী/  
 জীরাঁথু জখন তক গঁগজন ঋকুশ ঋজা ধীমতী/  
 শ্রী ঋজ রাঁরাঁ মিশ্রকাঁ ঋত মিশ্র কাশীকান্ত জী/  
 কুঁনখ নিরাসী তাবিণী পদমে নিরেদন দেঁছ গা//১১//  
 \* বানী চন্দ্বারতীক নেঁহক নাম গঁগা ছননি/

(রর্ষ~২, ঋঁক~৭, জ্বনাগ ১৭৩৪ গাে)

মধুপ জীক গা প্রাবম্ভিক বচনা ছনি ঋা 'প্রভাত'মে সুহস্তনিখিত  
 ছনি, তেঁ কোশিশ কেঁন ঋতি জে ঐতিহাসিক মহরকেঁ দেখেত  
 ছ-রাঁ-ছ প্রস্তুত কযন জায/ উতাবরাঁমে কতৌ জঁ রাতিঞম ভেন

হো আ সে কতৌ-কতৌ ভেনে হেত,এহি হেত হমবা ঋমা কখন  
জায়। 'বানী চন্দ্বারতীক রিষযমে 'প্রভাত'ক ঞনেক ঞঁকমে  
ঞনেক বচনাকাবক গল্প-পল্প বচনা ঞ্ছিত্তি। স্ততন্ব পোথীক কপমে  
ঞযাচার্য ঞ্ছানন্দ ঞ্যাক ছপন ছনি বানী চন্দ্বারতী চবিত। হম  
বানী চন্দ্বারতীক ঞ্ছতি সঁষ্টিপ্ত পবিচয প্রস্তুত কয বহন ছী,জে  
হমব পোথী 'কোজনখ'মে প্রকাশিত ঞ্ছিত্তি। বানী চন্দ্বারতী  
রঁনৈনী বাজ)পূর্ণিযাঁ(ক বানী ছনীহ/হিনক নৈহব ছননি  
কোজনখ/গ্র পুরাঁবি ঠৌনক খৌঞাবে নাহস মুনক প .উগ্রদত্  
ঞা রৈযাকবণক প্ত্রী বহথি। হিনক জন্ম সন 1299 সান টেত্র  
শ্বকু চতথী 1871/গ্র.মে ভেননি। গ্র চাবি ভাগ ঞ্ছা তীন রঁহিন  
ছনীহ/ হিনক নৈহবক নাম গঁগা ছননি। দ্বনু ছৌঠি রঁহিনক নাম  
যম্বনা এঁ সবস্তুতী ছননি। হিনক রিরাহ নৌ-দস রর্ষক রযসমে  
রঁনৈনী)পূর্ণিযাঁ(ক বাজা পদ্মানন্দ সিঁহক প্ত্র হমাব চন্দ্বানন্দ  
সিঁহসঁ ভেননি। ওহি সময় হমাব সাহেঁক ঞ্ছরস্থা কবীঁ

পন্দবহ রর্ষ ছননি/ মামিন রঁহিন যম্বনাক রিরাহ গামেক পছরাবি  
 ঠোনক প.জানকীনাথ মাসঁ ভেননি, জনিক রঁানক ভেনথিন  
 উমানাথ ম্য)ঙঁজীনিযব সাহেরঁ (এরঁ বমানাথ ম্য/ ছোঁঠি রঁহিন  
 সবসুতীক রিরাহ মনিযাবীক জর্মাঁদাব রঁবজনন্দন ঠাফবসঁ  
 ছননি/ ভাঙ নোকনি খনুপায় ভেনথিন/ এক ভাঙ গীতানাথ ম্যাক  
 রঁানক ছনথিন রীবেন্দ্বনাথ ম্য/ গঁগাদাঙক রিরাহ ভেননি  
 রিক্খ্যাচনমে/ সাস্ববমে হিনক নাম পড়ি গেননি পতিক নামপব  
 চন্দ্বারতী/রিরাহক চাবিএ-পাঁচ রর্ষক রঁাদ, জখন ঙ্র নগভগ  
 পন্দবহ রর্ষক ছনীহ, রিধরা ভঃ গেনীহ/ হিনকা পব তাঁ  
 রিপত্তিক পহাড়ে ঠুঁঠি পড়ননি/ স্বপন যোগাতা-  
 ঞ্ষমতা, চতবতা তথা দৃঢ় ঙ্ছাশঁজিক রঁনপব বাজ্যক শাসন-সূত্র  
 স্বপন হাথমে নেননি ঞ্খা এক-সঁ-এক মহত্ৰপূর্ন ও স্থায়ী কীর্তি  
 স্থাপিত কঃ গেনীহ, জে ঞ্খাঙযো হিনকা জীরিত বখনে ছনি/  
 হিনক কিছু কীর্তিক উন্নেখ এতঃ কখন জা বহন ঞ্ছি --

01.श्वपन नैहव)कोजनख(मे चन्दवानन्द ह्रुि मिड्न ङुगनिश  
सुह्रनक सुथापना 1924मे कयननि।

02.कोजनखक पुरँविद्या सीमापव माजक नामपव पोखवि आ  
ओकव पुरँविद्या मोहावपव भरा मन्दिवक निर्माण  
कबौननि, जाहिमे माता-पिताक नामपव उग्रेशुवी-उग्रेशुव  
महादेरक प्राण-प्रतिष्ठा कयननि।

03.कामखामे बहनिहाव नोकक जन-सँकठ देखि पहाड़पव  
पोखवि खूनौननि एरँ ओकव वखवखारक रारसुथा कयननि।

04. श्री रैठनाथ धाममे खल्लु मजरूत स्वसज्जित कोठा रँनराय  
श्वपन तीर्थ-पुवोहित रँदवी द्वावी)पँडा(केँ दानमे दऽ देननि।

05.भागनपुवमे ' शिरताविणी हासुपिठन )शुुीचिकिसोनय(के  
शुुार्थिक दुर्दशाकेँ देखि नाखो ठाका दानमे दऽ ओहि सुसुथाकेँ  
पुनजीरित कयननि।

06. रावाणसीमे रँनेनी बाजक कीर्तिमे तीन ठा सुसुथा हुन।

বানী চন্দ্রবারতী 1934ঞ্জ.মে ঝঁবক্ষনান)কচৌড়ী গনী(মে ঞ্ঠামা  
মন্দিবক স্খাপনা কযননি/ ঞ্খনেক দান-ধর্মক রিভাগ বহ্নাক  
কাবণে একব রিশেষ মহত্ৱ ঞ্ছন্টি।

ঞ্ঠামা মন্দিবক প্ৰসঁগ চ্ছাতরা থিক জে বানী সাহিঁরা ডেত্ নাখ  
খর্চ কঃ চাবি মন্দিব ঞ্খা এক ভরা রিশান চবিমহনা মকান  
ঝঁনরৌননি/ চাক মন্দিবমে পহিন-ঞ্খপন ঞ্গধ্দেরতা শ্ৰী 108 ঞ্ঠামা  
মন্দিব, দোসব -পতিক নামপব শ্ৰী 108 চন্দ্বেশুঁব মহাদেরক  
মন্দিব, তেসব -শ্ৰী বামজানকী মন্দিব ঞ্খা  
চাবিম -ঞ্খপন ভতীজী দিরাঁগতা মানতীক নামপব মানতীশুঁবী  
নঃক্ষমীক মন্দিব চ্ছনি/ মকানমে 'ঞ্ঠামা মহারিভ্ঠানয'ক স্খাপনা  
কযননি, জাহিঁমে রেদ,রেদান্ন্ত, ঞ্ঠায়, র্যাকবণ, জ্যোতিষ তথা  
ঞ্খঁগ্ৰেজীক পড়াগ হোঃছ/ সঁস্খাক স্খচাক সঁচাননক হেত পাঁচ  
সদস্খীয় মেঁনেজঁগ কমীঠী ঝঁনৌননি/ প্ৰথম কমীঠীমে  
বহথি -ক্হমাব বমানন্দ সিঁহ)Residing Trustee), কাশীনাথ

मा, उमानाथ मा, जगदीश ठाकुर तथा भागनप्रबक ओकीन सुवज प्रसाद/ रतमान कमीठीमे छथि -श्री बाजेन्द्रनाथ मा)Residing Trustee), डा .संतोष सिंह ठाकुर, श्री प्रसन्न कुमार मा, श्री शैलेश्वर मिश्र तथा श्री सहनाबायण मा/ बानी साहिवा प्रहेक संस्थाकेँ अमर रना देरक हेतु वजिसुधी मोसार्दिदामे एहि रिषयक सुप्रभु उन्नेथ कयने छथि जे मूनधनक कहियो कोा कोनो हेतुक राय नहि कऽ सकैछु, केरन ओकर सुदसँ कार्यसंचानन होयत/ श्रामा मन्दिरकेँ दस नाथ दान देननि आ आग्रुओ हन धन एही संस्थाकेँ देरक रचन देननि/ श्रामा मन्दिरक खर्क कपवेथा रर्षित अछि/ महगीक कावणे ररुत काज शिथिन पड़ि गेन अछि, किछु ररुन्दो भऽ गेन अछि/ मद अछि- मन्दिरक संवर्धन आ मवमृति; देरताक भोग- ाग; संसुगत महारिठानयक देखवेथ, शिक्कक रेतन, ङ्गात्रनोकनिक भोजन, ङ्गात्रासक खर्क, चिकिसो

শ্বাদিক খৰ্চ; কাশীসঁ শ্ৰমত্ৰো শ্ৰংগ্ৰেজী পঠনিহাব ছাত্ৰকেঁ বৃত্তি  
 দেন জাওত ছন )হমবো মনীশ্বাৰ্ডবসঁ দস ঠাঁকা মাস শ্বাৰি  
 জাওত ছন(; শ্ৰম্মাগতক ভোজন খৰ্চ; ঔষধানয়; শ্বনাথ  
 ঝানককেঁ মাসিক বৃত্তি; ঝিধৰা ঝ্ৰ্বাক্ষণীকেঁ  
 সহায়তা; দাহসঁস্কাবক হেত মদতি শ্বাদি।

হিনক কীৰ্তি দেখি নাৰ্ড ঝিনৰ্মিগঠন)Viceroy and Governor  
 General of India) এক সনদ প্ৰদান কs হিনকা 'বানী'ক  
 ঔপাধি দs শ্ৰনঁগ্ৰত কযনথিন। সনদমে নিখন শ্ৰদ্ধি " :I hereby  
 confer upon you the title of 'Rani' as a personal  
 distinction." এতs গ্ৰ কহেঁ শ্ৰপ্ৰাসঁগিক নহি হোযত জে ওহি  
 সময় পৰ্দাপ্ৰথা এহন ছনৈক জে সম্ৰাঠক প্ৰতিনিধি ঝনি শ্বাযন  
 ভাগনপ্ৰবক কমিশ্ণব বানী সাহিৰাঁক ডোঢ়ীপব সুৰ্য শ্বাৰি  
 পৰ্দাক ঝাহবেসঁ ঝানকা গ্ৰ সমাচাব দেনথিন। বানী সাহিৰাঁক  
 নিধন মাঘ শ্বকু নৰমী শ্ণি 1342 সান,তদনসাব এক

फुवरुवरी 1936 ग्रा.केँ तऽ गेननि/ हिनक श्राद्ध मामिन रँहिनक  
जेठ पत्र उमानाथ मा कयनथिन/ (स्रोतःकोजनथ )ग्रामगाथा ( :नेथक~ हितनाथ मा, पृष्ठ~39-41)

**संपादकीय सूचना-**एहि सिबीजक पुरवान एम एहि निँकपव जा  
कह पठि सकेँत छी-

मेथिनी साहित्यमे तारानाथ मा एरँ स्ननक परिवारबक योगदान-  
1

मेथिनी साहित्यमे तारानाथ मा एरँ स्ननक परिवारबक योगदान-  
2

मेथिनी साहित्यमे तारानाथ मा एरँ स्ननक परिवारबक योगदान-  
3

मेथिनी साहित्यमे तारानाथ मा एरँ स्ननक परिवारबक योगदान-  
4

मेथिनी साहित्यमे तारानाथ मा एरँ स्ननक परिवारबक योगदान-  
5

मेथिनी साहित्यमे तारानाथ मा एरँ स्ननक परिवारबक योगदान-  
6

মৈথিনী সাহিত্যে তাবানাথ ম্মা এৰুঁ স্মনক পবিৰাবক যোগদান-

7

মৈথিনী সাহিত্যে তাবানাথ ম্মা এৰুঁ স্মনক পবিৰাবক যোগদান-

8

মৈথিনী সাহিত্যে তাবানাথ ম্মা এৰুঁ স্মনক পবিৰাবক যোগদান-

9

মৈথিনী সাহিত্যে তাবানাথ ম্মা এৰুঁ স্মনক পবিৰাবক যোগদান-

10

স্বপন মঁতৰা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাওঁ।

২.৩.স্বভাষ ফ্ৰমাৰ কামত- চৰ্চিত গাম নৌখাৰাঁখব



स्वभाष क्कमाव कामत

चर्चित गाम नौश्वारखव

गामक नाम स्वनैत मातव सँ कतेको बास मोनमे श्लियान श्वारँय  
नगैत श्वद्धि/ गाममे हमव प्राण श्व जान रँसेत श्वद्धि/ रिशैषतव  
ओहि माठिक सौंधी स्वर्गध सँ गमकैत हमव गाम/ पाठक'क  
मोनमे गहो सरान उँठत जे कि श्वखिव गाम कहरै ककवा/  
एकठा छोटठिन मन्खक रँसारँठ जे शैहव - कसू सँ छोट  
श्वाओव कोनु नघु समुदाय बहरासिय स्थन सँ पैघ होगत छेक/

শ্বৰ্থাত জাহিঠাম নগধক 75 সঁ 1000 সঁখাাঁ ধবি ঘব বহেত হোয  
 শ্বাওব নোক এক দোসব সঁ চিব- পবিচিত বহেত য/ গ্রামীণ  
 প্রুঞ্চেত্ৰমে নোক খেতী শ্বাওব পশ্বপানন রারসায় পব নির্ভব  
 বহেত শ্বুষ্টি/ মহামো গাঁধী জী কহনে চুনেখ ভাবতক শ্বামো  
 গাঁঙমে রঁসেত ট্ৰেক/

শ্বখনো রঁদনন পবিস্থিতিমে স্বন্নব দেহাত দেখেক নেন ভেঠ  
 জাএত/ শ্বাধনিক নোক শ্বাওযো রঁন্নত কিছু সঁ স্বরিধারঁচিত  
 শ্বুষ্টি, তখনো নোক খুশী সঁ সঁতোষপ্রদ জীরন - যাপন কয বহন  
 য/ এহিকেঁ স্বচা খাঁঠী গাম কছ তঁ কোনো শ্বতিষ্ঠোজি নে/

দেশেমে সরঁ সান গামকে সঁখাাঁমে গিবারঠ শ্বারিঁ বহন শ্বুষ্টি,জে  
 চিন্তাক রিষয থীক/ শ্বনেকো নোক নিহত: প্রাসী রঁনি বহনয  
 শ্বাওব জীরন যাপনক নেন প্রদেশে শ্বা রিদেহে জা বহন য/ শহবী  
 চকার্চোঁধমে রৈসী বমন বহেত শ্বাওব শ্বপন মূন সমাজ সঁ কঠিঁ  
 জাঙাছ/ শ্বান প্রদেশেমে নোক কতরোঁ স্বখী সঁপন্ন বহন ছন, ম্বদা  
 কবোনা কান শ্বাওব নাউক ডাউন শ্বরধিমে শ্বপন গাম নৌঠেক

নেন মজৰুঁৰ ধৰি কযন গেন বহৈক/

হমবা মিথিনামে সেহো রুঁমত বাস গাম খুন্ডি/ সভ গামকেঁ কিছু

নে কিছু গতিহাস, হুগোন ষ্টেক, খা খপন পবিসীমন ষ্টেক/

খপনে নোকনি মিথিনাক রুঁমত গামক নাম স্ননে হোয়ৰুঁ খাওব

ৰুনন সেহো হোএৰুঁ/ চনু চনে ছী মিথিনাক কোসীকন্থা ঞ্চেক

একঠা গাম নৌখাৰাখব দেখয- ঘুময/

নরুঁখাব সঁ নউৰুঁখব খাওব নউৰুঁখব সঁ নৌখাৰাখব/

*Nowabakher, Nauwabakhar, Nauabakhar* সবকাৰী কৰ্মচাৰী

সভ জিনকা জে মোন ভেন সে বিকাৰ্ডমে নিখ দেনেখ/ কোনু

ৰৌনী-ৰাপী খা ভাষা কঠোবতা সৈঁ সবনতা দিশ জায়ত খুন্ডি/

জেনা -: ফুনপবাগ সৈঁ ফুনপবাস, গাৰ্ডন রাঁগ সঁ গৰ্দনী রাঁগ,

ৰৌন্থনাথ সৈঁ ৰৌজনাথ, জগনাথ সৈঁ জগবনাথ/ ঠীক তহিনা

গামক নামমে বসে - বসে পবিরতন হোজত নৌখাৰাখব ভহ

গেনেক/ দুব দবাজকে নোক তঁ খাওযো নৌখাৰাখব কেঁ

ନୌଆରାଠେବକ ନାମ ସଁ ଜାନୈତ - ରୁଁମୈତ ଶ୍ଚି/ ଶ୍ଚନାପ୍ତବ ପବଗାନକ  
 ନୌଆରାଠବ, ମଧ୍ଵରୁନୀ ଜିନାକ ହୁନପବାସ ଶ୍ଚନ୍ଵର୍ମଠନକେ ଘୋଘବଢୀତା  
 ପ୍ରଫୁଠମେ ଶ୍ଚରସ୍ଠିତ ଛେକ/ ନୌଆରାଠବ, ବେନରେ ଠଶିନ ଘୋଘବଢୀତା  
 ସଁ ୭ କିମିଠ ଦଞ୍ଚିଣ ଶ୍ଚି / ରାଠାଧାମ (ଦେରଘବ) ବସ୍ତାମେ ଜାହିନା  
 ଜିନେରିଘା ମୋଢ ଛେ, ଠହି ସଁ କମ ମୋଢ ନୈ ହେତ ଏତସ/

ଗାମକ ନାମକବଣକେ ପାଠ୍ଠାକ କିଦରୁତୀ ଐ ତବହକ ଶ୍ଚି; କହନ  
 ଜାଏତ ଶ୍ଚି ଜେ- ପାହିନେ ଏତସ ରୌଢ୍ଵ ଭିଞ୍ଚୁକ ନିରାସ ସ୍ଠାନ ଛୁନ/  
 ନର+ରୁଠାବ ଶ୍ଚର୍ଠାତ ନର- ନୌ , ରାଠବ - ଶ୍ଚନାଜ ବଠେକ ରୁଢ଼କା  
 ରୁଠାବୀ ରା ଢେକ/ ରୌଢ୍ଵ ଭିଞ୍ଚୁକ ସଭ ଏତହି ଶ୍ଚନାଜ ସିଘ୍ରାତ କୈବ  
 ବଠେତ ଛୁନାହ/

ଦୋସବ କିଦରୁତୀ ଶ୍ଚି - ଏହି ଞ୍ଚେକ ହମି ଠପଜାଠ ବହନ ଶ୍ଚି,ତୈ  
 ଛୁପବା ଶ୍ଚାଦିକ ରାହବୀ ନୋକିବହାବା - ରାପାବୀ ନୋକ ଏତେହ ଶ୍ଚାରି  
 ବାହି ଘେନେଥ/ କିସାକ ତଁ ଗ୍ର ସ୍ଠାନ ଞ୍ଚୁଚଗବ ଛୁନ/ ଏତହି ଶ୍ଚପନ  
 ସମାନ, ଶ୍ଚନାଜ- ରୁଁତାତ ଶ୍ଚା ଧେତୀ ସଁ ସିଠ୍ଠିତ ଠଜାବ ସଭ ବଠେତ  
 ଛୁନାହ; ସେ ଶ୍ଚାଗନ୍ତୁକ ରାପାବୀ ନୋକ ନଠୁରୁଠବ କହୈ ନାଗନ / ନଠ -

नौ (१) आओव रँखव - खेत जोतेह राना ँजाव सभ जेना  
- कोदाओव, खुवपी, हाँसु, छींठा, हव, हवीश, चौकी, पानो, रँवद  
आदि।

गामक चौहद्दी तँ रँतौनाओ रिसेव गेन छुनौँह। यथा-  
पूँव - मेँनहीँ , पछिम - धारघाँठ , उततवमे हँठनी आओव  
दक्षिणमे निघाम- सबौती। दक्षिण भाग मानचिअमे बाजसु मोजा  
देरनाथपँछी छी, मुदा सामाजिक कपेँ नौआँराखव -  
देरनाथपँछी अके गाम छी, अके डिँरावकेँ रँवदस्थानमे  
पूँजेत आँरि बहनेक हें। अतका डिहराव राँराके नामकवण  
'देरनाथ' छन्हि। मूनतः ओ कियोँठ/केँउँठ राँराना रँसुती छी, जतय  
राँवहो रणँ निरास कबैत छेँक। कियोँठ(केँउँठ) जाति  
अकसाँमक भोजमे राँवह मोन चाँडवक भात खाँगत छेँक।  
गामक चौहद्दी नामकवणके पँछाँ सेहो किदरँती खन्नसावे  
सबौती - जतय ँँती सडेँयन जाँएत छन - गाम गहिँव छन

রৈসী পানি বহেত ছনৈক তঁ পঠুঁআ গোবন জায়ত ছন/ এতহি সঁ  
সোন তেযাব কবি জুঁঠ কাবখানা পঠায়ন জায়ত ছন/ ঞখনো  
পঠসনক খেতী দেখে নেন ভেঠ জাএত/ গু কিসান ঞা গ্রষি  
মজদূব নেন নকদী জজাত মানন জাঙছ/

মৌঁনহী নামকবণ পঠুঁ গু কহন জাএত ঞছিত্তি জে ধাবক এতিহ  
পেঘ-পেঘ মৌঁন ছন ঞর্থাত পাঞ্জন খুঁরুঁ রৈসী বহৈক/ মন্থাহ সভ  
খুঁরুঁ মাছ মাবেত ছন/ ধারঘাঠ- ধাবক ঘাঠ জতহ মন্থাহ নোক  
নার রাঁঝেত ছন/ হঠনী - জে হঠি কে রঁসন নর গাম ঙ্গী/ গামক  
রিঁচোরীচ রিঁম্নন ধাব (নদী) রঁহেত ঞছিত্তি/ রিঁহাবকে নদিয়াঁ  
নামক কিতারঁমে সেহো গামক চর্চা ভেনি ঞছিত্তি/ দবঙঁগা মহাবাজ  
কচহবী সেহো ছন, ম্বদা নঁয ঞারঁ কচহবী বহন ; নে ও সারঁিকক  
নোক সভ ঞারঁ বহন/ গামমে মরেশীক কাবারাস (তাঠ) সেহো  
ছন জে জিনা পবিষদ সঁ সঁচানিত হোঙছ/

গামমে হিঁদু ঞাওব ম্বসনমান দনু স্ম্প্রদায - ধর্মক নোক রঁসেত  
ঞছিত্তি / হিঁদুমে কেৰঠ (কেউঠ), ফঁভহাব, নাঙ, তেনী, সূবী,

হেনরাঞ্জ, মোচী, ডোম, রঁড়ঞ্জা খা বাজপূত য তঁ ম্বসনমানমে  
 মোমীন, ধনিয়াঁ, ধোরী, ফজবাকে খারাদী ঙ্কেক/ কতেকো মঁদিব  
 যথা, মহাদের মঁদিব, কানী মঁদিব, হন্বমান মঁদিব, বাধাগ্রঞ্জ মঁদিব,  
 রিসহাবা স্থান, কমনেসবী পৌখৈব খাওব তীনঠা মস্জিদ  
 সেহো খ্ছি/ গামক নোককে পেশা গ্রষি খ্ছি/ জাহিমে ম্বখা  
 ফসন খ্ছি ধান, গহঁম, খেবলী (মঁগ), মড়ুখা, পঠসন(চন্ন-  
 চন্নী)সনৈ, পঠুখা, সাগ-সরঁজী, খাম, নীচী, রাঁস, কেবা, মাঙ  
 খাওব পশ্বপাননমে (গায়, মহঁস, রঁকবী, ফক্ফঠ, রঁতখক  
 পানন) খাওব মাঠিক রঁতন খায় কে ম্বখা স্রোত ছী/ / ম্বখা  
 রাঁজাব পহিনে নহবিয়া খা মধেপ্বব ডন, খারঁ মধেপ্বব  
 ঘোঘবডীহা খ্ছি / ঘোঘবডীহা হাঠ মে সবকাবী / /, মহিনা  
 ঠির্চর্স ঠ্ঠেনিগ, ডীগ্ৰী কানেজ, শিষ্কক প্রশিষ্কণ কেন্দব, খঁচন সহ  
 প্রখঁড কার্যানয়, প্বনিস থানা, বেনরে স্ঠেশঁন (ফুনপবাস  
 রিধানসভাক একমের বেনরে স্ঠেশঁন) রিঁজনী কার্যানয়,

ডাকঘর, স্বস্পতান, সবকাবী ঞনেক র্ৰেঁক, গাডী এর্জেসী ঞাদি  
বহেঁত ওনা ঘোঘবডীহা উত্তব র্ৰিহাবক ঞনাজ মঁডীমে স্বমাব  
ঙ্ঠে।

এতকা নোক বাজনীতিমে সেহো সক্রিয় বহন ঞন্ডি, শ্রী নানদের  
কামত রিধানসভা প্রহাশী (BSP) বহি চুকনাহ জে রর্তমানমে  
ভাবতীয় জনতা পাষ্টী ম মঁমাবপুব জিনাকে সহপ্রভাবী ছুথি। শ্রী  
হীবানান চৌধবী উপ প্রমুখ রঁনন ছুনাহ, শ্রী রঁনবাম সান্না জিনা  
পার্ষদ বহি চুকনাহ, শ্রী বঁগনান চৌধবী দৃ থেপ পেক্‌স০ ঞধাঃ  
বহনাহ। প্রমোদ ঠাফব (রৈঁচু ঠাফব) দূনু পতি-পনৌ পঁচায়ত  
সমিতি সদস্য বহনাথি। সঁজয ফ্রমাব নিবানা মুখিযা রঁননাহ।  
ঞঙ্কুন জনীনকে পন্নি সবপঁচ রঁনন ছুনাহ। শ্রীমতী স্বমিত্রা দেবী  
জিনা পবিষদ প্রহাশী ছুনাহ, রিনোদ ফ্রমাব কামত মঁডন ঞধাঃ  
ভাজপা০ বহথি।

গামমে শিঃয়াকে প্রতি নোক জাগকক ভেনথিন। ভাবত সবকাব  
ঞাওব র্ৰিহাব সবকাব দূনু জগহ নৌকবীমে কার্যবত ঞন্ডি। শ্রী

वामनोचन कामत ँभवसिखब सलहेरँ आ शिरँनोचन कामत दूनू  
 डलष शिखक छथि। श्री ँमलकलत कामत (BSF), मनोज हलमलब  
 (SBI), जय प्रकलश कामत (BSF), बलजू जी, अलमनेश हलमलब  
 आओब अलनेको गोलुथ बलनेरेमे कलरुबत अछि। डेडु दर्जन सँ  
 अथिक नोक शिखक छथि - श्री महलकलत प्रसलद ँछ मलधलमिक  
 शिखक संघ मधरँनीक जिनलधलख बहि चूकन छथि। अरुधेश सलल्ल,  
 बलजेश हलमलब अलमनजी, रलशेशुब कलमत, रँनबलम डुधवी, अलललष  
 हलमलब कलमत शिखक रँनय सँ पूरँ IFFCO केब हेड कुलुठबमे  
 कलरुबत बहन, ओहि सँ पूरँ कओकठल रँकमे सेरल दह चूकन  
 छथि। केनलश हलमलब अलनंद, ँदय ररुमल, बलजहलमलब, रँैजू मंडन,  
 मलं हलबोज, ँलं बललहित हलमलब ( SDO), ँलं बलललन हलमलब  
 (पोनलठैकनलक), डलं अलशीष हलमलब (रैठनबी), डलं अलमन  
 हलमलब डुधवी (डैठलसुठ ), प्रुं रँचन सलह , मलं शैमशेब  
 ग्रलमील पलनलस पदसुथलपलत अछि।

গামক নোক সাহিহ - কনা ঞাওব সঁস্ৰতি সঁ সেহো জ্বড়ন ঞ্চি  
 - সমীক্ষক শ্রী নানদের কামত জী, সমাজসেরী কেব সঁগ- সঁগ  
 সূতঁত্র পত্রকাব ঞাওব নেখক বহন ছ্চি/ কোসী সঁদেশে মেথিনী  
 ত্রেঁমাসিক পত্রিকাক সহ সঁপাদক ছ্চি, গামমে কতেকৌহ রেঁবি  
 মিথিনা রিহ্চতি স্মৃতি পরঁ সমাবোহ ঞাযোজিত কেননি ঞা 'সগব  
 বাতি দীপ জবয' কথা কার্যক্রম সেহো ঞাযোজিত কবরৌনে  
 ছ্চি/ স্নানক কিছু প্ৰস্তুক সেহো প্রকাশিত ঞ্চি - ঞ্জেষ ভাবত  
 - ঞ্ঠন ভাবত, দিরা দৃষ্টি, রিহ্চতি ঞ্চাদি/ মহাকাঁত প্রসাদজী  
 সেহো পত্র- পত্রিকামে বচনা নিখেত বহেঁত ছ্চি / ঐ পাঁতিক  
 নেখক সেহো করিতা ঞাওব রীহনিকথা নিখেত বহেঁ ছ্চি/  
 কেঁনাশ ফ্রমাব ঞান্দ জীক বচনা পত্র - পত্রিকামে কম দেখেক  
 নেন ভেঁঠয, ম্বদা সোশৈন মীডিয়া পব স্নানক গীত ঞা করিতা খূঁ  
 সূনেঁয পঠেঁয নে ভেঁঠেঁত ঞ্চি/ নাঁঠক ঞাওব ঞ্চিনযমে প্রম্বখ  
 পাত্র বহনাহ ঞ্চি- মহাকাঁত প্রসাদ, রঁনবাম সান্গ, বামফ্রমাব  
 কামত, রেঁজু মঁডন, প্রদীপ উঁডাবী, গোপান সঁঁহ, উঁদয চৌধবী,

ବାମନୋଚନ କାମତ, ମନୋଜ କାମତ, କିସ୍ତନ ବାମ, ସ୍ୱଭାଷ ହମାବ  
କାମତ, ନଃଃମଣ୍ଣ ସାହ/ ନଃଃମଣ୍ଣ ସାହ କତେକୋ ମୈଥିନୀ ଫିଲ୍ମ୍‌ମେ  
କାଜ କୈବି ଚୁକନ ଯ/

ଗାମ୍‌ମେ ପହିନେକ ଶ୍ୱପେଃଃ ଶ୍ୱାର୍ ଝ଼ନୀତ ବାସ ପବିରତନ ଭ' ଗେନୈକ  
ହେନ/ ନୌଶ୍ୱାର୍‌ଖବ ଗାମ ଶ୍ୱାର୍ ଗାମ ନୌ ବହନ, ଦବସନ୍ 1995 ଖ୍ରୀଠମ୍‌  
ସର୍‌ସ୍‌ ପୈଘ ବକର୍‌କାକେ ମୌଜା ବହନେ ପଂଚାୟତ ଝ଼ନି ଗେନୈକ/  
ନୌଶ୍ୱାର୍‌ଖବ, ହଠ୍‌ନୀ, ସହୋବର୍‌, ଧାରଘାଠ୍ ଶ୍ୱାଠବ ଧନପତର୍‌ବହୀ  
ମିନାକେ ପଂଚାୟତ ପବିସୀମନ ଝ଼ନି ଗେନ ଯ/ ପଂଚାୟତ ନାମକବଣ  
ନୌଶ୍ୱାର୍‌ଖବ ଗାମେକ ନାମ ପବ ଶ୍ୱଠ୍ଠି/ ଗାମକ ଜନ ଶ୍ୱାରାଦୀ କବୀର୍  
ତୀନ ହଜାବ ହୋୟତ/

ମିଡିନ ସ୍ଘନ ଶ୍ୱାର୍ ଠଃ ଠାଧାମିକ ରିଘ୍ଠାନୟ କୋଡ ନୌଶ୍ୱାର୍‌ଖବ ଝ଼ନି  
ଗେନି/ ରିଘାବ ସବକାବ ଦ୍ୱାବା ପଂଚାୟତ ଭରନ ଶ୍ୱାଠବ ଝ଼ାଠ୍ ବାହତ  
କେନ୍ଦ୍ର ସେହୋ ଝ଼ନି ଗେନ, ଶ୍ୱସ୍‌ପତାନ ଝ଼ୈନି ବହନ ଯ/ ପଂଚାୟତକ  
ସହୋବର୍‌ ଗାମକ ନିରାସୀ ଶ୍ରୀ ରିବେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରସାଦ ରର୍‌ମା ଜୀ ମାନବୀୟ

শ্রায়মূর্তি রঁননাহ পঠনা হাঞ্জকোঠক। এহী পঁচায়ত'ক হঠনী  
 গামরাসী শ্বজীত শ্বাজাদ জীকে ফ্লনক বচনা পব সাহিহ  
 শ্বকাদমী প্ববস্কাব ভেঠন ছুহি। য়রারফ্ল সভ দবভঁগা, পঠনা,  
 দিন্নী, কোঠা, র়েঁগনোব, কোনকাতা শ্বা দেশক শ্বান - শ্বান  
 ঞ্চেএমে জাকয উচ্চ শিখ্ণা হাঙ্গিন কেঁবি বহিনয হেন। গামক  
 নোক সভ শ্বারিঁ র়ুমি বহনয জে শ্বপন মাত্ৰভাষা কেঁ। সঁরিধানকে  
 শ্বপ্তম সূচিমে শ্বারিঁ গেনা সঁ ভাষা (মৈথিনী) বোজী বোঠী নেন  
 সাধন রঁনন শ্বক্তি। য়রতী সভমে শ্বপন মাত্ৰভাষা মৈথিনী রিষয  
 সঁ শ্বাগা পড়়াক কচি জাগি বহিনয য। চঁদা ফ্ৰমাৰী মৈথিনী  
 রিষযমে স্মাতকোত্ৰব পঠনা রিশুরিছানয সঁ কযনিহ, সঁগহি  
 মধ্ৰঁনী পেঁঠিঁগ সেহো নিক রঁনারেঁ ছুথিন। প্ৰীতি ফ্ৰমাৰী, রঁরীতা  
 ফ্ৰমাৰী, শ্বাবতী ফ্ৰমাৰী শ্বাওব সঁগীতা ফ্ৰমাৰী সঁগে শ্বাবো য়রতী  
 সভ মৈথিনী রিষয প্ৰতিছা সঁ গ্ৰেজ্জুএঠ ভেনিহ শ্বক্তি। গামক  
 য়রতী সভ সেহো সবকাৰী নৌকৰী কেঁবি বহিনয য। ম্ৰস্ৰনিম  
 সম্ভদাযকে য়রাতব সভ বোজী- বোঠীক খাতিব শ্বারিঁ রিদেশ

जाए नागन हेन/ गामक किछु नरहरा रहिअमके नोक  
शदिगत्रमित सेहो भ गेन, जे रासनमे निप्त बहि सोशेन  
मीडिया आओव अनन्धन हसंगतमे पडि अपन रतमान रर्राद  
केवि बहनय य।

गामक चौक हाँ- राजाव रनि गेन छेक/ किछु आदमी गाम सँ  
रापिजा कवि बहनय, जाहिमे सहन अछि- अवरिद साम्ना  
(अनाज), उमाकांत कामत(हार्ड रेयव), बाजहमाव  
साह(मिथान ओव हन), अजीत वाम (सागरव केहे), प्रहनाद  
हमाव (दरा), नरहश हमाव (रतन भाड़ा), सुंदव नान चौधवी  
(मार्न्स ओव पथेव), नवेद्र चौधवी उर्फ नानाजी आओव  
ताबकेशुव मंडन छैछ साँड काबोरावी अछि।

नरहरक नोकनि कानी पूजा आओव छठिपूजामे गाम आरैत  
अछि। प्रेम आओव सौहार्द सँ पूजा- पाठ कबैत अछि। आर  
नगधक सब पूजा आयोजन म्ना नागन जेना- प्रथम जन्माश्रमी,

গণেশ পূজা, রিশুকর্মা পূজা, সবসুতী পূজা, তজিয়া (দাহা),  
কানী পূজামে মেনা নগেত খ্ৰিষ্টি/ তীন খেপ নামী যচ্চ এতয  
খ্ৰিতিতমে স্বসম্পন্ন ভেন খ্ৰিষ্টি/ খ্ৰাৰ্ গামক শৌষ্ণিক মাহৌন  
ৰ্ৰদৌন গেন সঁগে খ্ৰৰ্থরারস্থা সেহৌ/

খ্ৰাখবিমে করি মঁত্ৰেশুবক খ্ৰনচিঁহাব গাম, নানদের কামতকে -  
ডেবৰুঁক গাম খ্ৰাওব স্বভাষ ফ্ৰমাব কামতকেব- হেবেযান গাম  
করিতা যাদ খ্ৰৰৌত খ্ৰিষ্টি/ স্বভাষ ফ্ৰমাব কামত পাঁতি এহি  
তবহক বচন পড়নে হোযৰ্ :-

....□.ৰ্ৰড় হবাস ভেনি

জখন দেখনৌ

শ্ঠেনীরিজন স্কীন পব

গ্ৰমশ্বদাক সৃচিমে

হেবায়ন খ্ৰপন গাম/

- স্বভাষ ফ্ৰমাব কামত, +2 শিষ্ণক (হিঁদী), উচ্চ মাধ্যমিক

रिठानय नौअरररख, घोरवडीहर (मधररनी)

अपन मतरर [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) पव पठाड।

२.४.नानदेर कामत-२ ठर नघुकथा- अरगौर आ रन्देमातवम



नानदेर कामत

२ ठर नघुकथा- अरगौर आ रन्देमातवम

१

अरगौर (नघुकथा)

मिथिनांअन सँ ररवदक सँगे की - की ने उंपरठि गेनेक हेन।

अरगहन मास आररै सँ पहिने ररररी गोनड धानक कठनी हठनीमे

ड' गेन वहेक। गिबहत सरँ दौनी कवारररर ररररररर केँ तगेदा

कयन। ख्रेसव पव धवि एक खनिया रौरा नह गेन छन। से पाँओ

কোনা খেতক মনজয় দেখয়- স্বনয় নেন ফবাক - ফবাক দৌনী  
 কবাওন গেন/ খারঁ নাপী ঠীন সঁ কবয় নেন উত্তত ভেন নেরতিয়া  
 তঁ ফনা রাঁরুঁ হাঁ- হাঁ.... কহেত মনা কেনাহ খা পাঁচ সূপ ধান  
 পৃথক ক' বাখে নে কহননি/ হেমন্ত ঋত ক' স্বখাগত ধী- রেঁঠী  
 ঐ খর্গোঁ রাঁনা ধান সঁ গামপব কবতীহ/ রেঁঠেদাবনি রঁজনীহ  
 রাঁরুঁ যৌ হমবো পোতী ম্ববলী কিনয় নে খঁগো দূ সূপ ধান নিখ  
 কহি গেন বহয় সে একবঁগকেঁ দূঠাম রাঁঠি দেত ছীযেঁন/ ধবি  
 খর্গোঁ পহিনে জেকাঁ খারঁ জগজিয়াব শঁর্দ উচাবিত নহ  
 কছুমছাণ্ডাত বহন/

২

### রন্দেমাতবম (নঘুকথা)

পচতা গন্মমক রৌগ ভ' চুকন ষ্টেক/ খাবিক পছুরবিয়া খেতিহব  
 কমান খা রঁকিম সেহো জঙ রঁননক খা স্বভাষ কেব জনমন

रिँहैन केँ धाँगेत छेँकुँठव पूँभव न' गेन/ धवि पह - नाना  
रँनरैत खवरिन - बरिनके करिँत स्वनि सरँके सरँ मगन भँ  
उँठन बहय/ जजात नोकसान कबरँक गपुँप तव पड़ि गेनेँक/  
केमूहबो सँ मोहन सेहो धवाक दह खारिँ कहनक हौ करिँजी  
मदबसा ठौनमे गारँन भ' गेनह तँ हमबा सँगे चनह ने/ जयह  
धवती माय रँाना गीत- रँदे मातवम्... गारिँ शिरानय पव  
स्वनरिँहय! ऐँ सँ तँ एकता रँठेँ छेँ ने/

खपन मँतरा [editorial.staff.vidaha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.vidaha@zohomail.in) पव पठाँड।

২.৩. পবমানন্দ নান কৰ্ণ-মাযক নান



পবমানন্দ

নান

কৰ্ণ

মাযক নান

ঘব মে পতিদেৱক তসূৰি পব নাগন হাব স্বধাজী কে ডোনা  
কে বাখি দেনে ছন / ঝুটাপা মে খসগব পীড়া খসহনীয খা  
ছদয ৱিদাবক হোযত খছি / কিছু সোচেত সোচেত স্বধাজীক  
দিন দৰ্দ সঁ ভবি গেন ছন খা খাঁখি সঁ ঠর-ঠর নোব গিব বহন  
ছন / স্নানকব ঘবৱানা সঁ জ্বড়ন সর চীজ সমেঠ ঝুঠোবি কে  
খানমাৰী মে বাখি দেনে ছনখি / জে ঘব কহিযো পবিৱাবক  
খিনখিনাহুঠ সঁ গ্বনজাব ছন খাজা ও একদম শীত ভহ গেন খছি

/ ग्रा सन्नाष्ठा स्वधाजी के काष्ठे दौड़ेत छन / स्वधाजीक  
 पति वमेशजीक खजबना किछु मास भेन छन / स्नानकव क्रिया-  
 कर्म मे सर विश्वेदेदाव आसन छनाह , मुदा आर सर विश्वेदेदाव  
 अपना अपना घब चनि गेन छनाह / एहन नहि छन जे स्वधाजी  
 अकेने छनीह / स्नानका द्वेष्ठा रानक छनेन / दुनक रियाह नीक  
 परिवार मे भेन छन / पैघ रैष्ठा सौबभक अपन काबोराव  
 छन, स्नानक कनिया बोहिणी गृहणी छनीह / छोष्ठा रैष्ठा स्वमन राहव  
 काज कबैत छनाह / जाहि अफिस मे काज कबैत छनाह ओहि  
 अफिस मे एकष्ठा नडकी सँ स्नानका प्रेम भह गेननि / सौबभक  
 रियाह भेनाक राद वमेशजी के एहि सङ्ग मे पता चन,  
 तहन ओ स्वधाजी सँ कहनखिन जे अहाँ स्वमन से पछु जे ग्रा  
 रात सही अछि / एक दिन स्वधाजी फोन पव स्वमनजी सँ पूछनखिन  
 जे हमबा सरके स्नान मे आरैत अछि जे अहाँ कोनो नडकी  
 पसंद केने छी / जौं ग्रा रात सह अछि तह हमबा सरके

রতাঙ / হম সর পতা নগারী জে ও কেহেন খানদান কে ছুথি  
 / এহি পব সৌবভ কহনখিন, □ মায ! হম খলঁ সঁ কিএক  
 ছুপায়র, একঠা নড়কী খুছি জে খপনে এবিযাক খুছি / ম্বদা  
 রিনা খলঁ সরহক সহমতিক হম কোনো রাঁত নহি কহি সকেঁত  
 ছি / □ এহি পব স্ননকব মায কহনখিন ও তহ ঠীক খুছি, ম্বদা  
 জোঁ নড়কী ঠীক ঠাক খুছি খা পবিরাব ঠীক খুছি তহ রিযাহ  
 মে কোন খড়চন খুছি / হমবা নড়কীক রাযোডাঠা ভেজু খা  
 নড়কী কে কঙ্গ জে

খপনা ঘব মে রাঁত কবখীন / স্মনজী গ্ৰা রাঁত খপন প্রেমিকা  
 সঁ কহনখিন তহন ও বাজী ভহ গেনীহ / ঘব পব ও ফোনক  
 মাধাম সঁ খপনা মায কে কহনখিন, □ মায ! স্মন নামক একঠা  
 নড়কা হমবা ওফিস মে কাজ কবেঁত খুছি / স্ননকব স্ভার  
 রঁড্ড নীক খুছি, জোঁ খলঁ স্ননকা রাঁরুঁজী খা মাঁ সঁ রাঁত কবতঙ্গ  
 তহ নীক বহিতে/ ওনা খলঁ সর সোচি নিখ/ □ নড়কীক রাঁরুঁজী  
 স্মনজীক রাঁরুঁজী সঁ রাঁত কহ শাদীক নেন তেযাব ভহ গেনাহ

/ एहि प्रकाव स्वमनजीक रिथाह भेन छन / रासुर मे  
 स्वमनजीक कनिया सुंदर आ सुशीन छनीह / स्वमनजी दृन प्राणी  
 माय-रारुजीक महत्र रूमैत छनाह / मनकब शदीक किछु दिन  
 भेन छन / परिवार मे एक दोसब सँ मिनान सेहो बहैत छन  
 / स्वधाजीक तरायत खबार बहैत छन / जखन धवि बमेश  
 जिरैत छनाह, खान-पान आ दराजक पूवा धान बखैत छनाह  
 / स्वधाजी के कोनो तबहक अस्वरिधा नहि होयत छनैन / मुदा  
 बमेश जीक गजबनाक रौद मनकब जीरन अस्त रास्त भइ गेन  
 छन / रारुजीक प्रिया कर्मक रौद स्वमनजी आ मनकब घबरानी  
 के नोकबी पब जेनाज जकबी छन / तेँ ओ दृन प्राणी डूठी  
 पब चनि गेनाह / मनका दृन आदमीक अछा छन जे माय हमबा  
 संग बहथि / मुदा जखन अ रात परिवार मे बाखनथि तहन  
 स्वधाजीक रँडकी रँझ कहनथिन, ँदेरब जी अहाँ दृन गोठेँ तइ  
 नोकबी पब चनि जायर, माँ जी अकेने घब पब रौब हेथिन

তেঁ স্নানকা এহি ঠাম বহহ দিশ্বঙ / হম নীক সঁ হিনকব দেখভান  
 কবর / এহি নেন শ্বলঁ চিঁতা নহি কব / ও গ্ৰা ৰাঁত এহি নেন  
 কহনখিন জে ৰাঁৰুঁজীক পেন্‌শন আৰ মায কে মিনতেন ,জোঁ  
 গ্ৰা স্বমনজী নগ চনি জেতীহ তহন পেন্‌শনক পাগ্ৰ তহ স্বমনজী  
 নহ নেখিন, তেঁ ও সোচনখি জে মায কে হম শ্বপনা পাস বাখী  
 / ধীবে-ধীবে সময় রাতিত ভেন স্বমনজী মায কে দৰাগ্ৰা-  
 ৰীবোক নেন সর মহিনা ভেযাক খাতা মে পাগ্ৰ ভেজ দৈত  
 ছনখিন/ সর কিছু ঠীক ঠাক চনি বহন ছন /

সময়ক সঁগ স্বধাজীক তৰীযত পহিনে সঁ খবাৰঁ বহহ নাগন /  
 সৌবভ শ্বা স্নানকব ঘবরানী ধীবে-ধীবে এনা মঁহ মোড়হ  
 নাগনখিন জে মান্ন স্বধাজী সঁ স্নানকা কোনো সবোকাব নহি ছৈন  
 শ্বা ও শ্বপনা জিঁদগী মে মস্ত ছনাহ / এক দিন স্বধাজী শ্বপন  
 পেঘ ৰাঁনক সৌবভ কে কহনখিন, □ ৰৌশ্বা হমব তৰীযত ঠীক  
 নহি নাগি বহন শ্বছি / এক ৰেঁব ডাক্‌ঠব সঁ হমবা দিখা দিশ্ব  
 /□ এহি পব সৌবভ জী কহননি, □মায ! হমবা নগ শ্বখন সময়

নহি ঞ্ছি / ঞ্ছলঁ ঞ্ছপনে চনি জাউ / □ তাহি পব স্বধাজী  
 কহনখিনি, □ রৌঞ্ছা ! ঞ্ছলঁ তহ জানেত ছী জে হমব হানত ঠীক  
 নহি ঞ্ছি / কতল্ল চক্কব খা কে গিব জায়ত ছী / □ তখন  
 সৌবভ কহননি, □ মায স্বমন কে ফোন কহ ল্লনকা সঁ পাঞ্জ  
 মঁগরা নিঞ্ছ / ও পাঞ্জ ভেজ দেতাহ তহন হম ঞ্ছলঁক ডাক্ঠব  
 নগ নহ জায়র / □

সৌবভক রাঁত ঞ্ছনি স্বধাজী হৈবান বহি গেনীহ ঞ্ছা কহনখিনি-  
 রৌঞ্ছা ! ঞ্ছখন তহ সর মলীনা ঞ্ছলঁক রাঁরুঁজীক পেন্শন  
 ঞ্ছারেত ঞ্ছি, স্বমন সেহো ভেজনে হেতাহ, ঞ্ছলঁ সেহো  
 কমা বহন ছী, তেযো ঞ্ছলঁ নগ হমবা নেন পাঞ্জ নহি ঞ্ছি /  
 স্বধাজী ঞ্ছ রাঁত ঞ্ছনি রাঁড়কী রাঁছ কহনখিনি - □ কেহন ঞ্ছলঁ  
 মায ছী জে ঞ্ছপনা রাঁঠাক পাঞ্জ পব নজবি বাখেত ছী / ঞ্ছখন  
 কোবোনাক কাবণ সর কাম ধঁধা চৌপঠ ভহ গেন ঞ্ছি ঞ্ছা  
 স্বমনজী তহ নীক দবমাহা পারেত ছুখিনি, ল্লনকা নেন কোনো

পবেশানী নহি হেতনি /□ রঁছক রঁাত স্বনি স্বধাজী কহনখিন/  
 □কনিয়া ঠীক খ্ৰুছি / হমবা কনি স্বমন সঁ রঁাত কবা দেৱ /□  
 গ্ৰ স্বনেত ও খ্ৰপনা দীখ্ৰব কে ফোন নগা কহ স্বধাজী কে  
 পকড়া দেনখিন / স্বমনজী ফোন উঠেনখিন তহন স্বধাজী  
 কহনখিন, □হেনো রৌখা স্বমন !□ ওম্হব সঁ খ্ৰারাজ খ্ৰায়ন,  
 □মাঁ গোব নগে ছী কী হান চান / খ্ৰহাঁ ফ্ৰশন মঁগন সঁ ছী নে ?  
 ভেয়া ভাভী ফ্ৰশন মঁগন সঁ ছুথি নে ?□ এহি পব স্বধা জী  
 কহনখিন, □রৌখা হমব তরীযত ঠীক নহি খ্ৰুছি তহ হম  
 সোচনক্ষ জে ডাক্ঠব সঁ দেখরা নী /□ এহি পব স্বমনজী  
 কহনখিন, □মায খ্ৰহাঁক তরীযত খবারঁ খ্ৰুছি খ্ৰা খ্ৰহাঁ খ্ৰখন ধবি  
 সোচি বহন ছী জে ডাক্ঠব সঁ দেখরারী /□ এহি পব স্বধাজী  
 কহনখিন, □রৌখা গ্ৰ রঁাত নহি খ্ৰুছি হমবা থোড়েক পাঞ্জক  
 খ্ৰারখ্ৰকতা ছন /□ এহি পব স্বমনজী কহনখিন, □মাঁ গ্ৰ রঁাত  
 পহিনে রঁতা দেৱাক চালী / ঠীক খ্ৰুছি খ্ৰখন হম ভেযাক খাতা  
 মে পাঞ্জ ভেজ দেত ছী / খ্ৰহাঁ তবঁত ডাক্ঠব সঁ দেখা নেৱ /

हेम श्रहँ सँ रँद मे रँत कबर, पहिने डेयाक खाता मे पाञ्ज  
 डेज देत छी / ँञ्ज कहि स्वमन जी होन बाधि देनखिन  
 आ सौबडक खाता मे पाञ्ज डेज देनखिन / दुपहब मे  
 डोजनक समय मे जखन सौबड खाना रास्ते घब एनाह तहन  
 स्वधाजी कहनखिन जे स्वमन पाञ्ज डेजनक श्रद्धि / मोरँञ्जन मे  
 डेक कबर पाञ्ज श्रायन श्रद्धि की नहि ? सौबड श्रपन मोरँञ्जन  
 मे देखनेथि आ माँ के कहनखिन जे हँ माँ मेसेज श्रायन  
 श्रद्धि / स्वमन पाञ्ज डेज देनक श्रद्धि, मृदा श्रखन डार्कुठब नग  
 नहि जा सकर किएक तह किछु ज़कबी काम श्रायर गेन श्रद्धि,  
 कनेक देब मे श्राडि बहन छी तहन श्रहँ के डार्कुठब नग नह  
 जायर / स्वधा जी मायूस डह रिँडौना पब पडि बहनीह आ  
 रँँठाक श्रयरक डँतजाव कबह नागनीह / रँँमत देब डँतजाव  
 कबना पब जखन सौबडजी नहि एनाह तहन ओ श्रपना रँँद सँ  
 कहनखिन जे कनिया ! रँँशा श्रखन धवि नहि श्रायन / श्रहँ

ডাক্ঠৰ নগ হমবা নহ চনু আ ডাক্ঠৰ সঁ দিখা দিখ / ঝুঁখাব সঁ  
হমব শৰীৰ তপি বহন খছি আ দেহ সেহো তোড়ি বহন খছি /  
গা স্বনি ঝুঁকী ঝুঁহু কহনখিন, ঞখলোঁ কে তহ দোসব কোনো  
কাম তহ নহি খছি , থোড়ে থোড়ে দেব পব দৰ্দ নহ কে ঝেঁসি  
জাযত ছী / খখন এক ঠাম দৰ্দ হোযত খছি তহ খখন দোসব  
ঠাম দৰ্দ হোযত খছি / ঝুঁড়াবী মে গা সর খাম ঝাত খছি আ  
গা নাগনে বহত / সদিখন খলোঁক সেৱা স্বশ্ৰুষা মে নাগন বহৰ  
তহন ঘবক কাম কোনো হোযত ? ঞ এহি পব স্বধা জী কহননি  
- কনিয়া হম সৌবভ কে কহনে ছনগ্গ ম্বদা জকবী কাম পড়ি  
গেন হেতনি তেঁ ও নহি এনাহ খছি / স্বমন সেহো ম্ননকা পাগা  
ভেজ দেনকেন খছি / ঞ ঝাত স্বনেত ও খাগি ঝুঁনা ভহ  
গেনীহ আ মন্বনাগাত কহনখিন জে হম কী কবী ? ঝাহব  
কোনো কাম সঁ গেনখিন খছি, জহন এতাহ তহন খলোঁ কে  
ডাক্ঠৰ পাস নহ জেতাহ / হম ঘব সম্ভানী কী খলোঁক ডাক্ঠৰ  
নগ নহ জাঙ / ঝিঁছৌনা পব পড়ন বহু / ঝেঁঠা খাৰেত ছনি তহন

डाकुँठव नग नह जेतनि । एकहि रात के रेँव रेँव कहि हमव  
 दिमाग खबारँ नहि करु । स्वधाजी रँदुक रात स्वनि चुप भह  
 गेनीह आ रिँदोना पव नेँठ गेनीह । नेँठन अवन हानत आ  
 भाग्य पव सोचेत छनीह आ रेँठाक गुँतजाव कह बहन छनीह  
 जे कखन ओ घब एताह जे हम कहर रौआ हमवा डाकुँठव  
 सँ देखा दिअ । गुँतजाव कबेत-कबेत स्वधाजी थकि गेनीह  
 वाति भह गेन म्ददा ओ घब नहि एनाह । वाति मे नगभग ११  
 रँजे घँठी रँजन तहन ओ रँमनथि जे सौबभ एनाह अछि । ओ  
 शैवारँक नशा मे धत छनाह । चुपचाप अचना कमवा मे चनि  
 गेनाह । एकल्ल रेँव नहि प्बुछनथिन जे माय अहाँक तरीयत  
 केहन अछि । स्वधाजी सौबभक आराज स्वनि सममि गेनीह जे  
 सौबभ आङ्ग नशाक हानत मे छथि । एहि स्थिति मे क्लनका  
 कहनाङ्ग ठीक नहि छन तेँ ओ चुपचाप रिँदोना पव पड़न बहनीह  
 । दोसब दिशँ स्वधाजीक देह मे जकड़न महसूस भह बहन

ছননি / মন ঠীক নহি বহনাক কাবণ ও বাতি মে খানা সেহো  
 নহি খেনিহ / ঝিনা খেনে ঝিন্টোনা পব দর্দ সঁ কবাহ বহন ছনহি  
 এহি ঝাতক মনান নহি তহ সৌবভ কে ছন খা নহি ঝানকা  
 কনিয়া কে ছননি /

দোসব দিশ স্বমনজী দূন প্রাণী কাম মে রাস্ত ছনখি / দেব বাতি  
 ঘব এনাহ তহ ঝানকা ধ্যান মে খায়ন জে মাযক মন খবারঁ ছন  
 / ভেয়া কে পাঞ্জ ভেজনে ছনম্গ জে মায কে ডাক্ঠব সঁ দেখা  
 দেৱে / পতা নহি ও দেখনখিন কী নহি ? ও সোচেত ছনাহ জে  
 ওফিসক কাম মে ততেক রাস্ত ভহ গেনম্গ জে মাযক হান-চান  
 সেহো নহি নহ সকনম্গ/ স্বমনজী ঞপনা ঘবরানী কে কহনখিন,  
 □ দেখু নে ! খাঞ্জ মাযক তরীযত খবারঁ ছন / হমবা ওফিস মে  
 ফোন কেনে ছনহি জে পাঞ্জ ভেজ দিখ / হম ডাক্ঠব সঁ  
 দেখায়র/ হমব তরঁরীযত ঞখন ঠীক নহি ঞছি / হম ভেয়াকে  
 পাঞ্জ ভেজ দেনে ছনিযেন / পতা নহি ঝানকব তরঁরীযত কেহন  
 ঞছি /□ এহি পব স্বমনজীক ধর্মপনৌ কহনখিন জে হম

মাঁ কে ফোন নগা কহ স্নানকব হান-চান বঁমৌত ছি / স্বমনজী  
 কহনখিন নহি শ্বখন নহি / কিএক তহ শ্বখন বাতি র়েসী ভহ  
 গেন শ্বছি / মায সরেবে স্বতি বহৌত ছুথিন / স্নানকা নহি  
 উঠাউ / ভিনসবে মায সঁ রাঁত কবর শ্বখন চণ খানা রঁনাঙ  
 তহন দূন শ্বাদমী সোচেত ছি জে কী কএন জায ?  
 গা রাঁতচীত কবেত দূন প্ৰাণী খানা রঁনারহ মে জ্বিষ্ট গেনীহ /  
 খানা রঁনা কহ দূন শ্বাদমী খাযত ছুনাহ তখনে স্বমনজী  
 কহনখিন জে হমব গছা হোযত শ্বছি জে কনি মায সঁ ভেঁঠ কহ  
 শ্বারি / বক্ষ কনি হম ওফিস মে রাঁত কবেত ছি জে ওম্হব  
 কম্পনী কে কোনো কাম শ্বছি কী নহি ? জোঁ ওম্হব  
 কম্পনিক কোনো কাম হোযত তহ কম্পনিক কাম সঁ চনি  
 জাযর / গা স্বমন জী খানা খা কহ শ্বপনা রাঁস কে ফোন  
 নগেনখিন জে ওম্হব কোনো কাম রাঁচন শ্বছি / স্নানকা পতা  
 চনন জে এক প্ৰোজেক্ট পব কিছু শ্বাদমী কাম কহ বহন শ্বছি

ম্বদা প্রোজেক্ট পূবা নহি ভহ বহন ঞ্ছি / রাঁস কহনখিন জে  
 হম তহ চাহেত ছনম্ন জে ২-৩ দিনক নেন ঞ্ছাঁ দেখ নেতম্ন  
 তহন ঠীকে বহত/ ওনা এহি ঠামক কাম দেখ নিখ / এহি পব  
 স্বমন জী কহনখিন জে ঠীক ঞ্ছি হম ওমাজী সঁ রাঁত কবেত  
 ছী জে এহি ঠাম কোনো কাম ফঁসন তহ নহি ঞ্ছি / জোঁ ফঁসন  
 নহি হোযত তহন হম ওম্হবে চনি জাযত ছী / স্বমনজী ওমাজী  
 সঁ প্ব্ছি ফেব রাঁস কে ফোন কেননি জে এহি ঠাম কোনো কাম  
 নহি ফঁসন ঞ্ছি / হম কান্হি ওম্হবে চনি জাযত ছী / এহি পব  
 রাঁস কহনখিন জে ঠীক ঞ্ছি, ঞ্ছাঁ চনি জাউ দেখর জে  
 প্রোজেক্ট মে কিএক দেব ভহ বহন ঞ্ছি / ওফিস মে রাঁত  
 কবনাক রাঁদ ঞ্ছপনা কনিযা সঁ কহনখিন জে ভিনসবে হম গাম  
 দিশে জা বহন ছী / মায কে সেহো দেখ নের/ ওহি ঠাম একঠা  
 প্রোজেক্ট পব কাম ককন ঞ্ছি, সেহো দেখ নের / গ্ৰ স্বননা  
 পব স্বমনজীক কনিযা সেহো কহনখিন চণ নে হমম্ন একঠা  
 মেন কম্পনী কে ডানি দেবো / হমম্ন মাজী কে দেখ ঞ্ছাৱেত

छि / दून्न प्राणी अणन किछु कपड़ा रैंग मे बाखनथि आ भिनसवे  
 गाम जयरक नेन सोचनथि / भिनसवे दून्न प्राणी गाम आरि  
 गेनाह / गाम मे सर स्वतने छन / सौबभ न्नका देखे चोँक  
 गेनाह आ कहननि, ँछोठे ! अचानक गाम एनन अछि, कोनो  
 खास रात तह नहि अछि / स्वमनजी न्नका गोव नागि कहनथिन,  
 ँनहि ठेया ! हमब कम्पनीक एकठा प्रोजेक्ट अणने  
 गामक रँगन मे चनेत अछि,ओहि ठाम किछु काम अछि तह  
 सोचनन जे अन्न सर सँ ठेठे कह नी / ँ सौबभजी कहननि जे  
 नीक केनन,अणन घब एहिना यादि बखराक चाही / जन्म स्थान  
 रँड्ड पेघ होयत छे /

तकब रँद स्वमनजी अणना माय के कमवा मे गेनाह / ओ स्वतन  
 छनीह, दून्न प्राणी न्नका उठा के गोव नागनथिन तह महसूस  
 भेननि जे मायक शैबीव तह रूखाव सँ तपि बहन अछि आ  
 न्नका नग कोनो तबहक दराज रगेबह सेहो नहि अछि /

স্বমনজী র়েটেন ভহ কহনখিন - মায খহাঁক দেহ তহ  
 তপি বহন খছি / খগন-রঁগন দরাঙা সেহো নহি দেখ বহন ছী  
 / কান্হি খহাঁ ডাক্ঠব সঁ নহি দেখেনে ছনম্মঁ কী ? এহি পব  
 স্বধাজী কহনখিন জে কান্হি রৌখা কোনো কাম মে উনমি গেন  
 ছন, তেঁ মনকা ফুর্সত নহি মিননেন / খাঙা ডাক্ঠব সঁ দেখা  
 দেখিন / স্বমনজী জোব সঁ সৌবভ কে কহনখিন - ভেয়া !  
 কনী এম্হব খাউ/ সৌবভ কহননি - হাঁ ছোঠে ! খারি বহন ছী  
 /সৌবভ কে এনাক র়াদ স্বমন জোব সঁ কহনখিন - ভেয়া  
 দেখু তহ মাযক দেহ তপি বহন খছি / খহাঁ ডাক্ঠব সঁ নহি  
 দেখেনে ছনম্মঁ কী ? এহি সৌবভ জী কহনখিন - দবখসন মেঁ  
 কান্হি হম এক জববী কাম মে ফঁসি গেন ছনম্মঁ / খাঙা হম  
 দেখা দেত ছী / ওনা খহাঁক ভাভী সঁ কহনে ছনম্মঁ জে জোঁ হমবা  
 নেঠ ভহ জাযত তহন মাঁ কে ডাক্ঠব সঁ দেখা দেরে ম্বদা  
 মনকা ঘবক কাম সঁ মৌকা নহি মিননেন / স্বমনজী দুন প্রাপী  
 চুপচাপ স্বধা জী কে ডাক্ঠব নগ নহ গেনখিন / ওহি ঠাম র়ী

পী চেক কএন গেন তহ পতা চনন জে রীপী রঁঢ়ন ঞ্ছি /  
 ডাক্ঠব সাহেঁ ঞ্ছাওব ঠেঁস্ঠ নিখনথিন / স্বমনজী ঠেঁস্ঠ বিপোঁঠ  
 ডাক্ঠব কে দেনথিন / ডাক্ঠব সাহেঁ কহননি -মৌসমী রঁখাব  
 ঞ্ছি , এক দ্ব দিন মে ঠীক ভহ জায়ত / রীপী ঞ্ছা স্বগব দ্ব  
 রঁঢ়ন ঞ্ছি তেঁ ঞ্ছাৰ হিনকা রীপী ঞ্ছা স্বগবক দরাঙা সেহো  
 চনত / এহি পব স্বমনজী কহনথিন - রীপী ঞ্ছা স্বগবক দরাঙা  
 তহ চনি বহন ঞ্ছি / স্বমনজী মাঁ সঁ পূছনথিন - মাঁ ! ঞ্ছলোঁ  
 রীপী ঞ্ছা স্বগবক দরাঙা তহ নেত ছী নে ? এহি পব ও রঁজনীহ  
 - হাঁ রৌঞা ! পহিনে তহ নেত ছনম্ম ম্বদা পিছনা মহীনা দরাঙা  
 খমে ভহ গেন , তহিয়া সঁ দরাঙা নহি খা বহনম্ম ঞ্ছি / ঞ্ছা স্বনি  
 দ্ব প্রাণী ঞ্ছরাক বহি গেনাহ / স্বমনজী সর দরাঙা নহ কে  
 মাঁ কে ঘব ঞ্ছাননথি ঞ্ছা ফেব ঞ্ছপনা প্ৰোজেক্ঠ পব চনি গেনাহ  
 / স্ননকব ধৰ্মপনৌ স্বধা কে খানা থিনা কহ দরাঙা দেনথিন /  
 থোড়েক দেবক রঁখাব কমি গেননি ঞ্ছা স্বধা জী কে নীন সেহো

আৰি গেননি / প্ৰোজেক্ট পব সঁ এনাক ৰাঁদ স্বমনজী সৌবভজী  
 কে কহনখিন - ভেয়া ! মায কে সর মহীনা পেন্শন মিনেত  
 খ্ৰি , দোসব দিশ মাযক দৰাঙ- ৰীবোক নেন হম সর মহীনা  
 পাঙ ভেজেত ছী / তেযো খ্ৰী মায কে পিছনা এক মাহ সঁ  
 ৰীপী আ স্বগবক দৰাঙ নহি দেত ছী / আঙ ধবি খ্ৰী সঁ  
 গ নহি প্ৰচনক্ষ খ্ৰি জে ভেয়া খ্ৰী মাযক পেন্শনক পাঙ  
 কী কবেত ছী ? হমবা কোনো আৰথকতা সেহো নহি ছন, ম্বদা  
 খ্ৰী কে তহ মায পব খান বখরাক চাহী / এহি পব সৌবভ  
 জী কহনখিন জে হম সর মহীনা দৰাঙ তহ আনরে কবেত  
 ছনক্ষ,পিছনা মহীনা হমবা ধ্যান পব নহি বহন তেঁ দৰাঙ নহি  
 আৰি সকন/

দোসব দিন স্বমনজী মায সঁ কহনখিন - মায আৰ খ্ৰী হমবা  
 নগ বক্ষ /খ্ৰী কে কোনো তবহক পবেশানী নহি হোযত / খ্ৰীক  
 তৰীযত ঠীক ভহ জাযত তখনহি হম দূব আদমী খ্ৰী কে নহ  
 কে জাযর / স্বমনজী দূব প্ৰাণী ওফিস সঁ ছুষ্ঠী নহ নেনখি আ

गाम मे ककि गेनाह द्व दिनक ऱाद स्वधाजी ऱूखाव ठीक भह  
गेननि तहन स्वमन जी खपना भाग्रा खा भाती सँ कहनथिन जे  
हम माग्रा के खपना नग नह जायत छी । एहि पब सौबभजी  
कहननि - छोठे ! माय के एहि ठाम बहह दिखड , ओहि ठाम  
मनका दिक्कत हेतनि । खार ऱूठक शीबीव खछि, खलौ दून  
ख़ादमी ओफिस चनि जायर,माय घब मे खकेने की कबथिन ।  
ग्रा स्वनि स्वधाजी कहनथिन - नहि रौंखा , हम स्वमन सँगे बहह  
हमबा एहि ठाम दिक्कत होयत खछि । खलौ के तह हमबा  
डाक्ठव सँ देखेरक फुर्सत नहि बहैत खछि । स्वमनजी दोसब  
दिन स्वधाजी के खपना फ़ेुठ पब नह खानथिन ओहि ठाम एक  
दाग्रा ठीक केननि जे दिन भवि मनक देखभान कबथिन । साँम  
मे दून प्राणी ख़ारैत छनाह तह मायक सँगे खाना खायत छनाह  
। खार स्वधाजी ख़ावाम सँ छोठ ऱैठक सँग बहैत छनीह  
।

खपन मंतरा [editorial.staff.vidaha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.vidaha@zohomail.in) पब पठाड ।

ପତ୍ର

୩.୧. ଶ୍ରୀମତୀ ଶ୍ରୀମତୀ ଶ୍ରୀମତୀ - ୨ ଠା ଗଜନ

২.১. আশীষ ঞনচিহাব- ২ ঠা গজন



আশীষ ঞনচিহাব

দৃ ঠা গজন

১

উম্হব উড়নে নাখো জী

ভম্হব ঠুঠনে ঞাসো জী

ঞসগব র়়সন ঞ্গনমে

ମାଠିକ ମୂବତ ମାଧୋ ଜୀ

ନହିଏ ଭେନେ ସ୍ୱାମୀ

ଚନିତେ ବହନେ ପାପୋ ଜୀ

ଞ୍ଜାହୋ ଦେଖରୁଁ ଜୀରନମେ

ସ୍ୱାମୀନୋ ହୁଁସତେ ସ୍ୱାମୀ ଜୀ

ମ୍ଲାନକବ କର୍ମକ ପୋଥବିମେ

ନହିଏ ନଗନେ ଥାହୋ ଜୀ

ସଭ ପାଁତିମେ 22-22-22-2 ମାତ୍ରାଂମ ଶ୍ୱାନ୍ତି/ ଦୂ ଶ୍ୱନଗ-ଶ୍ୱନଗ

ନଘୁକେଁ ଦୀର୍ଘ ମାନରାକ ଛୁଠ ନେନ ଗେନ ଶ୍ୱାନ୍ତି/ ଞ୍ଜା ରୁହବେ ମୀବ ଶ୍ୱାନ୍ତି/

୨

ପୂବା ଧବତୀ ନାପନ ଓ

छुप्पे छुप्पे कानन ओ

स्वव नयकावी श्वनकव छे

श्वनके श्वाशे नाचन ओ

सभुठ्ठा माया श्वनके छुनि

चुठ हावन पठु जीतन ओ

रिख माश्वव ओ कीदन था

कनिये कनिये रूँचन ओ

रूँडका दुख श्वनचिह्वावक

चिह्वावक छे दागन ओ

सभ पाँतिमे 222-222-2 मात्राक्रम श्वुछि (रूँहवे मीव)।

श्वपन मंतरा [editorial.staff.vidaha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.vidaha@zohomail.in) पव पठाडु।

*Maithili Literature in English Translation*

*4.1. The moon's Journey- Jagdish Prasad Mandal (Original  
Maithili Short Story) Rameshwar Prasad Mandal (English  
Translation)*

*4.1.The moon s Journey- Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story) Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)*



*Jagdish Prasad Mandal (Original Maithili Short Story)*



## **Rameshwar Prasad Mandal (English Translation)**

### **The moon's Journey**

After three years, Vishnudev returned to the village. In truth, visiting the village had not been on his mind at all. The thought came suddenly when his name was mentioned for a programme to travel to the moon. Vishnudev was a scientist. The institute was sending three people to the moon for exploration and study. The moment he heard his name, he thought that there were still twenty days left before departure. He would be leaving on the thirtieth of November, so in the meantime he could go to the village, meet everyone, and come back. Thus, Vishnudev arrived in the village a day before the festival of Chhath's Kharna ritual.

By the time Vishnudev reached the village, evening had fallen. That day he did not go out to meet anyone. Being from a large family, simply talking with everyone at home kept him engaged till late.

The next day, around two in the afternoon, Vishnudev went to see Padhua Uncle. Padhua Uncle had been a teacher at the village's lower primary school. He had retired two years earlier. Vishnudev had been his student

for four years, from learning the alphabet to the lower grades, up to class three. Apart from being fellow villagers, the two shared a social connection, and the teacher-student bond deepened their relationship.

Sitting at the doorway, Padhua Uncle was quietly thinking about the Chhath festival. The thought crossed his mind that the oil pressed from the sesame seed is heavier than the seed itself. Such was the fervour of the festival that it seemed every Maithil family from other states had returned home with their families, and even those working abroad had also arrived with theirs. Whatever they would spend on the festival itself would be far less than what they had spent on travel fares, and the time lost in travelling would have been considerable too.

As soon as he arrived, Vishnudev touched Padhua Uncle's feet in greeting and said- "I seek your blessings, Uncle." Although Padhua Uncle was over sixty years old, his disciplined life had preserved both the sharpness of his eyesight and the glow of his body. Blessing Vishnudev, Padhua Uncle said- "You used to come to the village once a year, every year. This time you have come after such a long gap."

Vishnudev replied- "Uncle, travelling with the family by public transport has become very difficult."

He spoke briefly, but Padhua Uncle, understanding yet curious, asked- "Why is that, Vishnudev?"

Vishnudev said- "Uncle, for one, the number of thieves and pickpockets have grown so much that you can never tell when something might happen. And another thing, the water we drink in the village, people in the cities will not even accept as a gift. Buying drinking water during travel costs a hundred or two hundred rupees at least."

Smiling, Padhua Uncle said- "People earn precisely so they can eat and drink. And in the cities they earn much more than the people in the villages. So if it costs money, even then it is still better than what the village offers."

Vishnudev replied- "But throwing one's earnings into the water is hardly a good thing either, Uncle."

Understanding the figurative meaning in Vishnudev's words, Padhua Uncle decided not to pursue that line of thought further and asked- "And how else are you, Vishnu?"

Vishnudev said- "I should say I am well. There is one piece of new news, and it is to share that with you that I came to the village."

Padhua Uncle asked- "What is it?"

Vishnudev replied- "Uncle, you are not only my father's elder brother, you are also my guru. Even now I remember vividly that it was from you that I first learned the

alphabet. □

Hearing this, Padhua Uncle was deeply moved. A thought also passed through his mind that in today's environment, most people forget favours as easily as a bitter gourd sheds its bitterness, yet there are still some who always strive to acknowledge a kindness and remain grateful.

With quiet affection, Padhua Uncle said- □ Vishnu, every person has their own responsibilities, just as they have responsibilities toward others as well. What was my duty I have fulfilled, and you may think of it in whatever way you wish. □

Vishnudev said- □ Uncle, on the thirtieth of November there is a scheduled programme to travel to the moon, and my name is among those being considered. So □ □ Without fully understanding, Padhua Uncle said- □ You will have my blessings. □

Vishnudev continued- □ Uncle, a team of three will go. More than ten people have applied. I have also applied. Selection will be through a lottery, so it cannot yet be said with certainty, but it seems likely that I might be chosen. It will be a space journey lasting a full month. I thought that if I were not able to return from the trip,

*I should at least visit the village now and meet everyone. Of course, it is not certain that I will not return, nor is it certain that I will definitely come.□*

*Hearing this, Padhua Uncle reflected on the immense potential hidden within the human mind. Until now, they had known and understood the moon in one way, but with scientific exploration, they were beginning to see it in quite another.*

*While Padhua Uncle and Vishnudev continued their conversation, Padhua Uncle's wife, Damayanti, came and stood before them. Unlike most women, who keep a little distance before making a request, Damayanti came directly before her husband. This was her own courtyard doorway, and she recognised Vishnudev as well, but still, keeping to her husband's manner, she stood silently. Seeing her, Vishnudev rose, touched her feet in respect, and said- □Aunty, do you recognise me? I am Vishnudev.□*

*Damayanti said- □How can one not recognise people from the same place? Besides, my eyesight is still as good as it was before. Where do you live now, son?□*  
*Carrying the thread of thought forward, Vishnudev replied- □Aunty, as people in the village say, the worker knows his master's house just as the calf knows its*

home. □

At this, Padhua Uncle asked- □What work is it? □

Damayanti said- □Today is Kharna, and the bananas have not yet been riped. □

Padhua Uncle said- □Today there is only a small quantity of bananas for in the leaf basket, is there not? □

Damayanti replied- □Yes, but the plantain is still unripe. □

Padhua Uncle said- □Today is the village market. I will bring the bananas from there in the evening, as they will only be needed later. □

Damayanti said- □The Sugarcane has not yet been gathered. □

Padhua Uncle replied- □I will bring both the sugarcane and the bananas from the market. □

Damayanti asked- □What about the plantain tree? □

Padhua Uncle said- □We have to offer plantain. Whether the fruit is ripe or raw, the Goddess of Chhath will hardly mind. □

Damayanti was heading towards the courtyard when Sonelal arrived. Coming close to Padhua Uncle, he asked- □Uncle, have you heard the news? □

At Sonelal's question, Padhua Uncle wondered to himself which news this could be, for in the course of a day one

hears all kinds. He asked- "Sone, do I ever leave the doorway to hear anything? What news is it?"

Sonelal said- "It is very sad news, Uncle."

Hearing "very sad," Padhua Uncle's ears stood alert. What could be so tragic? He asked- "What is it?"

Sonelal said-

"Sharda Sinha has passed away."

Padhua Uncle had not known that she had been suffering from cancer. At once her mood sank. She had been admitted to AIIMS in Delhi, yet the illness had advanced relentlessly, and in the end she breathed her last. He asked- "What had happened to her that she died?"

Sonelal replied-

"Illness has neither beginning nor end that anyone can predict. I heard she had cancer for a long time, kept it hidden, and then it advanced so suddenly that it could no longer be controlled."

Padhua Uncle said- "Sone, this body of ours is a dwelling place for ailments. No one knows when or how illness will strike. With her, a great luminary of Mithila has come to an end."

Padhua Uncle was still talking with Sonelal, with Vishnudev seated before him, when Manchan arrived. Entering, Manchan touched Padhua Uncle's feet. Padhua Uncle blessed him and asked- "When did you arrive,

Manchan? □

Manchan worked for a tea company in Darjeeling. He said-

□ I arrived the day before yesterday, Uncle, but I was busy making arrangements for the festival. □

Padhua Uncle asked- □ How have you been? □

Manchan replied-

□ I have developed an ailment in both thighs, Uncle. I vowed to the Goddess of Chhath that if I were relieved of this illness, I would return to the village for the festival. That is why I am here. □

Hearing this, many thoughts stirred in Padhua Uncle's mind, but he said nothing. Just then, Damayanti Kaki arrived at the doorway with four cups of tea.

On seeing the cups, Manchan took a tin of tea leaves from his hand bag and gave it to Padhua Uncle, saying- □ Uncle, I brought this tin for you. It is tea that does not require milk. □

Padhua Uncle asked- □ What is the name of this tea? □

Manchan replied- □ People call it green tea. This half of kilo tin will last at least fifteen days. □

After drinking the tea, both Manchan and Sonelal rose and went. Vishnudev and Padhua Uncle remained seated. Padhua Uncle said- □ Vishnu, you are a scientist, so your

outlook is bound to differ from ours. What do you think of the Chhath festival?□

Vishnudev replied- □My life is tied to a fixed schedule, confined within certain limits, so I hardly get the time to think deeply about other subjects. Besides, it would not be right to speak to you about something I do not fully understand.□

Padhua Uncle said- □Since there is a plan for you to go to the moon, you must have studied and reflected on the subject of the moon.□

Vishnudev replied- □Uncle, the way the moon is regarded in society is very different from how it is seen in scientific terms. The programme is still in preparation. If, by chance, I get the opportunity to go and return, I will be able to share all the details clearly. For now, I am not in a position to say much.□

Hearing Vishnudev's words, Padhua Uncle accepted in his mind that what Vishnudev had said was indeed correct. Padhua Uncle said- □Vishnudev, I do not know everything myself. Whatever I have heard from others, that is all I understand. But□□

Vishnudev asked- □But what, Uncle?□

Padhua Uncle said- □There are some thoughts on which one can reflect. Today is the fifth day of the bright fortnight of the month of Kartik, and it is Kharna. After

partaking of the Kharna prasad, the devotees will remain fasting until the final ritual of the festival. At dawn on the seventh day, at the pond's ghat, they will offer arghya to the sun, and after that they will end their vow and take prasad. In between, they will remain fasting. Vishnudev said- "Uncle, I have seen all this with my own eyes and I understand it too, but"

Seeing Vishnudev fall silent after saying "but," Padhua Uncle felt that Vishnudev was not fully satisfied with his explanation. He thought it would be better to share what he knew so that his own integrity would remain intact. Padhua Uncle said- "Vishnudev, some farmers mark the festival between bringing home the previous harvest, meaning the paddy, and sowing the rabi crops in the fields. In that sense, this festival belongs completely to the farmers."

Hearing Padhua Uncle's words, Vishnudev nodded in agreement, but from the perspective of his scientific knowledge so far, doubts began to arise. Padhua Uncle noticed this and spoke again.

"Vishnudev, although the offering of arghya during this festival is to the sun and not to the moon, the dates of Shashthi and Saptami are determined according to the waxing and waning of the moon, not the sun."

Hearing this, Vishnudev was puzzled. After a moment, he asked- "Then?"

Padhua Uncle replied- "Vishnudev, the sun is the source of all life. Soil, water, and all else are formed by the sun's energy. The festival has scientific, cultural, and religious significance. Just as the sun contains seven colours, so too does life have seven colours. But there is one problem: the sun, which deserves to be worshipped every day, is honoured only once a year. The light of the sun is also seen as the light of knowledge. In the same way that the sun is not worshipped or honoured daily, the knowledge of human beings too is not always respected.

স্বপন মঁতরা [editorial.staff.videha@zohomail.in](mailto:editorial.staff.videha@zohomail.in) পব পঠাউ।

# विदेह लिटरेचर फेस्टीवल

रिदेह निठबेचव फेस्टीरन

२०००-२०२५

२०००-२०२७

WWW.VIDEHA.CO.IN

WWW.VIDEHA.CO.IN



(C)२०००-२०२५, विदेह प्रबन्ध मैगजिनी पब्लिक ई-पब्लिश ISSN 2229-547X

(C)२०००-२०२७, विदेह: प्रबन्ध मैगजिनी पब्लिक प्र-पब्लिश (ISSN 2229-547X)